सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

Title Code : DELHIN28985.
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 02, अंक 16, नई दिल्ली । शुक्रवार, 29 मार्च 2024, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

100 बार असफलता प्राप्त करने के बाद भी जो इंसान प्रयास करता रहता है उसे सफलता अवश्य मिलती है।

03 केजरीवाल क्या जेल में रहते हुए भी सरकार चला सकते हैं, क्या कहता है क़ानून?
06 कर करनी, कर जोड़ कर
08 बिजेड़ी उम्मीदवार सूची: पुराने अधिक, नये कम

20 मार्च 2024 से आज तक परिवहन विभाग की मुख्य आईटी शाखा नही खोली गई तो क्या 31 मार्च को बाकी शाखाओं को खोलने से मिलेगा वाहन मालिकों को फायदा ?

संजय बाटला

नई दिल्ली। दिल्ली परिवहन विभाग मुख्यालय में चल रही मुख्य आईटी शाखा में 19 मार्च की शाम को आग लग गई थी जिसमे शाखा के सभी इलेक्ट्रॉनिक संयंत्र जल कर खाक हो गए। 19 मार्च से आज 28 मार्च के अन्तराल में भी आईटी शाखा में कार्यरत अधिकारियों, कर्मचारियों और तकनीकी सहायको को परिवहन विभाग की और से मुख्यालय या अन्य किसी भी शाखा में बैठने का स्थान दिया गया और ना ही इलेक्ट्रॉनिक संयंत्र। क्या बिना संयंत्रों और स्थान के परिवहन विभाग के आईटी शाखा के तकनीकी अधिकारी, कर्मचारी और सहायक वाहन मालिकों को आनलाइन प्रक्रिया में आई परेशानियों का समय सीमा में निदान करवा पायेंगे और वह भी ऐसे समय में जब वार्षिक क्लोजिंग आ रही हो और आला अधिकारियों द्वारा जनहित में रविवार को भी सभी शाखाओं को खोलने के आदेश पारित हो।

आग लगने के कारणों को जानने में तो समय लगेगा और आग में जल कर खाक हो चुके संयंत्र भी वापिस ठीक नहीं हो सकते तो परिवहन विभाग जनता को आनलाइन आवेदन प्रक्रिया में परेशानी ना उत्पन्न हो और अगर हो भी तो तत्काल उसका हल निकालवाने के लिए आईटी शाखा को मुख्यालय में दूसरा कमरा और प्रयोग में आने वाले इलेक्ट्रॉनिक संयंत्र तुरन्त उपलब्ध करवाए।

वाहन स्क्रैप पालिसी का नया नियम 1 जून से होगा लागू

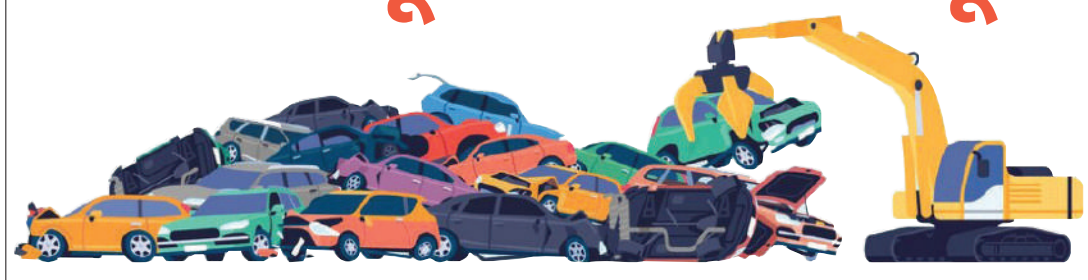

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। 1 अप्रैल 2023 के बाद 15 से 20 साल पुरानी गाड़ी आप खुद भी सरकार के मान्यता प्राप्त स्क्रैप सेंटर में जाकर स्क्रैप करा सकते हैं. लेकिन, यही नियम 1 जून 2024 से बदल जाएगा. जी हां अब 1 जून 2024 के बाद आपकी गाड़ी अगर सड़क पर चलती पकड़ी जाती है तो सीधे स्क्रैप सेंटर में भेज दिया जाएगा और आप पर जुर्माना भी लगेगा, और साथ में कोई सब्सिडी या छूट नहीं मिलेगी. ऐसे में अगर आप अपनी मर्जी से गाड़ी का स्क्रैप करा लेते हैं तो आपको सरकार की तरफ ये सारे फायदे मिलेंगे. गाड़ियों के स्क्रैप कराने के फायदे पहला फायदा, आपकी गाड़ी का जो भी वैल्यू है, उस वैल्यू का 4 से 6 प्रतिशत आपको मिलेगा. मान लीजिए आपकी गाड़ी 1 लाख रुपये की है तो आपको 4000 से 6000 रुपये और मिलेंगे. दूसरा फायदा, स्क्रैपिंग सर्टिफिकेट पर आपको नई गाड़ी के खरीदने पर उसके टोटल प्राइज पर 5 प्रतिशत छूट मिलेगी. तीसरा, नई गाड़ी खरीदने पर लगने वाला रजिस्ट्रेशन फीस भी नहीं देना पड़ेगा. चौथा, रोड टैक्स पर भी आपको छूट मिलेगी. रोड टैक्स पर प्राइवेट गाड़ियों पर 25 प्रतिशत की छूट और कमर्शियल गाड़ियों पर 15 प्रतिशत की छूट मिल रही है.

पुरानी गाड़ियों को स्क्रैप कराने की सुविधा देती है सरकार सरकार आम आदमी को पुरानी और अनफिट गाड़ियों को स्क्रैप करने की सुविधा देती है. सरकार की इस पॉलिसी का फायदा प्राइवेट और कॉर्मशियल वाहनों के मालिक उठा सकते हैं. स्क्रैप पॉलिसी के तहत आप पुरानी कार, बाइक, स्कूटर आदि को स्क्रैप के लिए दे सकते हैं. यदि आपकी कार को 10 साल (डीजल) या फिर 15 साल (पेट्रोल) साल का समय पूरा हो गया है, तो आप पुरानी गाड़ी को स्क्रैप में देकर इस पॉलिसी के तहत नई गाड़ी खरीदते समय मोटी रकम बचा सकते हैं. क्या है नई स्क्रैप पॉलिसी नई वाहन स्क्रैप पॉलिसी उन लोगों के लिए जरूरी है, जिनके पास अपनी कार है. इस पॉलिसी की शुरुआत प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने साल 2021 में की थी. वहीं, केंद्रीय बजट 2021-22 में इस पॉलिसी की घोषणा की गई थी. इस पॉलिसी के तहत 20 साल पुरानी कार और 15 साल से अधिक पुरानी कमर्शियल गाड़ियों का इस्तेमाल लोग नहीं कर पाएंगे. अगर कोई व्यक्ति ऐसी कारों को लेकर रोड पर चल रहा हैं तो उसे जुर्माना भी देना होगा. इस पॉलिसी को इसलिए लागू किया गया है, ताकि प्रदूषण का स्तर कम हो सके. पुराने वाहनों का फिटनेस टेस्ट होगा, जिसके माध्यम से पता चलेगा कि ये कारें रोड पर चलने के लायक है या नहीं. 1 अप्रैल के बाद स्क्रैप बन जाएंगी 15 साल पुरानी गाड़ियां सरकार के नियमों के अनुसार, 1 अप्रैल 2024 से 15 साल पुरानी गाड़ियों का रजिस्ट्रेशन रद्द कर दिया जाएगा. इसके बाद सभी 15 साल पुरानी गाड़ियां स्क्रैप बन जाएंगी. इसमें सेना की गाड़ियों को छोड़कर केंद्र सरकार, राज्य सरकार, केंद्रशासित प्रदेश, नगर निगम, राज्य परिवहन विभाग और सरकारी स्वायत्तशासी संस्थानों की गाड़ियां शामिल हैं. बताते चलें कि सरकार की नई स्क्रैप पॉलिसी के तहत हरेक साल 1 अप्रैल से 15 साल से अधिक पुरानी गाड़ियों को सड़कों से हटाने के लिए उनके रजिस्ट्रेशन को रद्द कर दिया जाता है. इसके बाद भी अगर किसी अपनी पुरानी गाड़ी को स्क्रैप होने से बचाना है, तो उन्हें उसका फिटनेस सर्टिफकेट बनाने के बाद री-रजिस्ट्रशन कराना होगा. तब जाकर उन्हें पांच साल तक का एक्सटेंशन मिल सकता है.अगर आपके पास 15 साल से अधिक पुरानी गाड़ी है, तो सावधान हो जाइए. 1 अप्रैल 2024 से आपकी 15 साल से अधिक गाड़ियों का रजिस्ट्रेशन रद्द हो जाएगा. इसके बाद आपकी गाड़ी सड़क पर नजर आने के बाद जब्त कर ली जाएगी. इसके साथ ही, पुरानी गाड़ी सड़क पर चलाने के एवज में आपको जुर्माने का भुगतान भी करना पड़ सकता है. दरअसल, 15 साल से अधिक पुरानी गाड़ियों का रजिस्ट्रेशन रद्द करने के पीछे सरकार का मकसद इन गाड़ियों से सड़कों से हटाकर स्क्रैप यानी कबाड़ बनाना है, ताकि ये गाड़ियों सड़कों पर अधिक प्रदूषण न फैला सकें. इसके लिए सरकार ने नई वाहन स्क्रैप पॉलिसी को पेश कर दिया है. यह पॉलिसी 1 जून 2024 से लागू हो जाएगी, लेकिन सरकार को 15 साल से अधिक पुरानी गाड़ियों का रजिस्ट्रेशन रद्द करके उनके मालिकों को आगाह करना चाहती है।

15 साल पुरानी गाड़ी को बचाने का क्या है उपाय...

नई स्क्रैप पॉलिसी के तहत 15 साल चल चुकी कार, बाइक, स्कूटर या स्कूटी को अगले 5 साल और चलाने के लिए री-रजिस्ट्रेशन कराना अनिवार्य होगा. इसके लिए आपको ऑटोमेटिक व्हीकल फिटनेस टेस्टिंग स्टेशन (एटीएस) से फिटनेस सर्टिफिकेट लेकर आरटीओ में जमा कराना होगा. उदाहरण के लिए अगर आपकी बाइक15 साल पुरानी है तो अगले पांच साल और चलाने के लिए फिटनेस सर्टिफिकेट लेकर री- रजिस्ट्रेशन कराना होगा. री-रजिस्ट्रेशन के नियम सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय ने री-रजिस्ट्रेशन को लेकर भी एक नया नियम बनाया है. पहले प्राइवेट गाड़ियों के री-रजिस्ट्रेशन के लिए 1000 रुपये देना पड़ता था, जिसे बढ़ाकर अब 5000 रुपये कर दिया गया है. इसी तरह प्राइवेट बाइक का रजिस्ट्रेशन फीस 300 रुपये से बढ़ाकर 1000 रुपये कर दिया गया है. विदेशी गाड़ियों का री-रजिस्ट्रेशन के लिए पहले 15,000 रुपये लिया जाता था, जिसे बढ़ाकर अब 40,000 रुपये कर दिया गया है. फिटनेस सर्टिफिकेट लेना जरूरी यातायात नियमों के अनुसार, अगर आप पहली बार अपनी गाड़ी एटीएस सेंटर में लेकर गए और किसी कारण से आपकी गाड़ी का फिटनेस सर्टिफिकेट नहीं बन पाया तो आपको एक और मौका मिलेगा. दूसरी बार भी आपकी गाड़ी में दिक्कत आ गई और आपके गाड़ी का फिटनेस सर्टिफिकेट नहीं बन पाया तो फिर आपको अपनी गाड़ी स्क्रैप में देने का अलावा दूसरा कोई विकल्प नहीं बचेगा. अगर दूसरी बार में फिटनेस सर्टिफिकेट मिल जाता है तो आप उसे आरटीओ में जमा कर री-रजिस्टर करा सकते हैं. लेकिन, री-रजिस्टर होने के बाद सिर्फ 5 साल तक ही आपकी गाड़ी सड़क पर चल सकती है. पुरानी गाड़ियों का कितनी बार ले सकते हैं फिटनेस सर्टिफिकेट सरकार के नियमों में बदलाव के बाद री-रजिस्ट्रेशन से पहले आपको मान्यता प्राप्त एटीएस से फिटनेस सर्टिफिकेट लेकर आरटीओ में जमा कराना होगा और फिर आरटीओ 5 साल के लिए लाइसेंस जारी करेगी. इसके लिए गाड़ी को एटीएस सेंटर पर लेकर जाना होगा और फिर मैकनिकल इक्यूपमेंट के साथ फिटनेस सर्टिफिकेट बनेगा. एटीएस सेंटर पर आपके गाड़ी का फिटनेस सर्टिफिकेट लेने का मौका सिर्फ दो ही बार मिलेगा.

नितिन गडकरी ने कहा नए टोल टैक्स नियम जल्द लागू होंगे ....

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री ने कहा है कि सरकार जल्द ही टोल टैक्स कलेक्शन सिस्टम को पूरी तरह से बदलने जा रही है। उन्होंने यह भी कहा कि राष्ट्रीय राजमार्गों का सड़क नेटवर्क अमेरिका के बराबर बनाना होगा. अब टोल प्लाजा पर टैक्स देने की जगह सैटेलाइट आधारित टोल कलेक्शन सिस्टम लागू किया जाएगा. इस नई व्यवस्था से हाईवे पर सफर करने वालों को फायदा होगा। क्योंकि वे जितने किलोमीटर की यात्रा करेंगे, उसके हिसाब से उन्हें भुगतान करना होगा। कारों में 'जीपीएस' सिस्टम लगाया जाएगा। केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने कहा, "अब हम टोल खत्म कर रहे हैं और सैटेलाइट आधारित टोल कलेक्शन सिस्टम लागू किया जाएगा. पैसा सीधे आपके बैंक खाते से काट लिया जाएगा और जितने नंबर का शुल्क लिया जाएगा आप जिन सड़कों से यात्रा करते हैं। उसी के अनुसार शुल्क लिया जाएगा। इससे समय और पैसा दोनों की बचत होगी। पहले मुंबई से पुणे तक यात्रा करने में 9 घंटे लगते थे, अब यह घटकर 2 घंटे हो गया है'" इसके साथ ही भारतमाला परियोजना के बारे में केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी का कहना है, "भारतमाला-1 परियोजना 34 हजार किलोमीटर की परियोजना है और भारतमाला-2 लगभग 8500 किलोमीटर की है'2024 के अंत तक इस देश की तस्वीर बदल जाएगी" यह पूरी तरह से बदल जाएगा। मेरा प्रयास राष्ट्रीय राजमार्ग सड़क नेटवर्क को अमेरिका के बराबर बनाना है और मुझे विश्वास है कि मैं इसमें सफल होऊंगा'" ऐसे लिया जाएगा टोल टैक्स टोल वसूलने के लिए सरकार दो विकल्पों पर विचार कर रही है. पहला तरीका- जिसमें कार का जीपीएस सीधे बैंक खाते से टोल लेने में मदद करेगा. दूसरा विकल्प नंबर प्लेट का है, जिसमें पुरानी नंबर प्लेट को बदलकर नई प्लेट लगाई जाएगी और फिर कम्प्यूटराइज्ड सिस्टम के जरिए सॉफ्टवेयर की मदद से टोल वसूला जाएगा। उन्होंने यह भी कहा कि अभी इस पर चर्चा की जा रही है और इनमें से किस विकल्प को चुना जाएगा।

बुलेट ट्रेन के लिए बना खास ट्रैक

नई दिल्ली। रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने भारत की पहली बुलेट ट्रेन के लिए बन रहे खास तरह के ट्रैक की पहली झलक दिखाई है। अपने एक्स हैंडल से उन्होंने इससे जुड़ा एक वीडियो पोस्ट किया। इसमें उन्होंने देश के पहले बैलेस्टलेस ट्रैक की खूबियां बताईं। गुजरात-मुंबई के बीच बनने वाले इस ट्रैक के बारे में वीडियो में विस्तार से जानकारी दी गई है। साथ ही एनिमेटेड तरीके से इसमें बुलेट ट्रेन के दौड़ने के दृश्य भी शामिल किए गए हैं। अश्विनी वैष्णव ने बताया कि 'मेक इन इंडिया' के तहत बने ये ट्रैक बैलेस्टलेस हैं यानी ऐसे ट्रैक, जिनमें तेज रफ्तार ट्रेनों के भार को सहने के लिए पटरियों में रोड़ी-पत्थर और कॉन्क्रीट के एंगल की जरूरत नहीं होती। वैष्णव ने बताया कि इस ट्रैक पर रफ्तार 320 किमी प्रतिघंटा तक होगी। इनमें 153 किलोमीटर वायाडक्ट का काम पूरा हो चुका है। इसके अलावा 295.5 किमी का पीयर वर्क भी पूरा हो चुका है। यह विशिष्ट ट्रैक सिस्टम- जे-स्लैब बैलेस्टलेस ट्रैक सिस्टम प्रयोग में लाया जा रहा है। इस ट्रैक सिस्टम के मुख्यतः चार भाग हैं। वाया डक्ट के ऊपर आरसी ट्रैक बेड, सीमेंट-असाफाल्ट और मोर्टार की परत, इसके अलावा पहले से सांचे में ढाले हुए स्लैब और फास्टनर्स के साथ रेल भी। प्री-कास्ट आरसी ट्रैक स्लैब का निर्माण देश में ही दो स्थानों पर किया जा रहा है। गुजरात के आणंद में और किम में। लगभग 35 हजार मीट्रिक टन रेल आ चुकी हैं। निर्माण कार्य तेज गति से चल रहा है।

अब वाहन चालक का लाइसेंस, वाहन का पंजीकरण और प्रदूषण नियंत्रण (पीयूसी) प्रमाणपत्र जैसी भौतिक दस्तावेज ले जाने की कोई जरूरत नहीं है।

क्या आपको इन तीन ट्रैफिक नियमों की है जानकारी ? पुलिस नहीं कर सकेगी परेशान

नियमों को असरदार तरीके से लागू करने के लिए, सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय (MORTH) ने ऐसे नियमों का एक सेट जारी किया है जो भारतीय वाहन चालकों की बहुत मदद करेगा।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। भारत दुनिया का तीसरे सबसे बड़ा वाहन बाजार बन गया है। भारत में साल दर साल बिकने वाली कार, बाइक्स और स्कूटर्स की संख्या चौंका देने वाली है। और इस संख्या के लगातार बढ़ते जाने की उम्मीद है। हालांकि, कानून लागू करने वाली एजेंसियों के लिए सभी वाहन चालकों पर नजर रखना मुश्किल हो जाता है। पिछले कुछ वर्षों में, ऐसे कई मामले सामने आए हैं जहां पुलिस कर्मियों द्वारा वाहन चालकों को परेशान किया गया है। नियमों को असरदार तरीके से लागू करने के लिए, सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय (MORTH) ने ऐसे नियमों का एक सेट जारी किया है जो भारतीय वाहन चालकों की बहुत मदद करेगा। यहां हम आपको इनमें से, तीन ट्रैफिक नियमों के बारे में बता रहे हैं, जिनके बारे में सभी को पता होना चाहिए।

भौतिक दस्तावेजों की जरूरत नहीं है

अब वाहन चालक का लाइसेंस, वाहन का पंजीकरण और प्रदूषण नियंत्रण (पीयूसी) प्रमाणपत्र जैसी भौतिक दस्तावेज ले जाने की कोई जरूरत नहीं है। कानून लागू करने वाली एजेंसियों को डिजि-लॉकर या एम-परिवहन एप्लिकेशन के जरिए दिखाए गए ड्राइविंग लाइसेंस, पंजीकरण प्रमाणपत्र या किसी अन्य दस्तावेज को स्वीकार करने के निर्देश दिए गए हैं। इन एप्लिकेशन में चालक/सवार और वाहन का पूरा डिटेल्स होता है। इसलिए, कानून लागू करने वाले कर्मचारी डिजिटल रूप से दस्तावेजों का आसानी से देख सकते हैं। और चालकों को भौतिक प्रतियां (हार्ड कॉपी) दिखाने के लिए परेशान नहीं कर सकते।

भौतिक या डिजिटल कॉपी नहीं चाहिए

अगर ड्राइविंग के दौरान चालक के

पास मोबाइल नहीं है। और इस वजह से वह डिजि-लॉकर या एम-परिवहन ऐप के जरिए डिजिटल दस्तावेज नहीं दिखा पा रहा है। तो कानून लागू करने वाली एजेंसी के कर्मचारी अपने एम-परिवहन या ई-चालान ऐप पर ड्राइविंग लाइसेंस डिटेल्स या वाहन पंजीकरण डिटेल्स की वेरिफिकेशन (सत्यापन) कर सकते हैं। एजेंसी वाहन संख्या डाल कर यह जानकारी हासिल कर सकती है।

चालान का भुगतान

यदि यातायात नियम तोड़ने पर चालक को चालान मिलता है, तो पुलिस अपराध के आधार पर ई-चालान भेजेगी। चालक इस जुर्माने का भुगतान राज्य सरकार द्वारा प्रदान किए गए विभिन्न ऑनलाइन ऐप के जरिए या विभिन्न शहरों में रखे गए विभिन्न चालान काउंटरों के जरिए भी कर सकता है। हालांकि ज्यादातर समय ई-चालान भुगतान प्रणाली के जरिए इन जुर्मानों का भुगतान करना सबसे अच्छा होता है। ऐसे करने पर भुगतान जल्दी तो होता ही है, और कानून लागू करने वाली एजेंसियों से पावती (एक्नॉलेजमेंट) भी मिलती है।

पूरे दस्तावेज को परिवहन वेबसाइट पर देखा जा सकता है।

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)
TOLWA
website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com
रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल - 0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण
रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मेंन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

गर्भावस्था में करेला खाना चाहिए या नहीं, 99% लोगों में होती है कंफ्यूजन, जानें क्या कहते हैं विशेषज्ञ

प्रेग्नेंसी हर महिला के लिए अलग अनुभव होता है. इसमें जितनी खुशी होती है, उतनी ही अधिक सावधानियों की जरूरत होती है. खासतौर पर खानपान को लेकर. क्योंकि आपका हेल्दी खानपान ही बच्चे को सेहतमंद रखता है. इसलिए प्रेग्नेंसी के दौरान क्या खाएं और क्या नहीं? ऐसे ही कई शंका और सवाल करेले के सेवन को लेकर हैं. इसको लेकर ज्यादातर लोगों में कंफ्यूजन रहती है. इसे लेकर हर किसी के अपने मत और तरीके होते हैं. लेकिन, विशेषज्ञों की इसपर क्या राय है यह जान लेते हैं.

गायनेकोलॉजिस्ट डॉ. अमृता साहा ने News18 को बताया कि करेला सेहत के लिए फायदेमंद चीजों में एक है. करेले का स्वाद काफी कड़वा होता है. इसलिए कई लोग इसको खाने से बचते हैं. हालांकि, ये कई पोषक तत्वों और खनिजों से समृद्ध है और सेहते के लिए इसे हेल्दी माना जाता है. हालांकि आमतौर पर सुरक्षित समझी जाने वाली कई सब्जियां प्रेग्नेंसी के दौरान जोखिम पैदा कर सकती हैं. जहां करेला खाने के कुछ फायदे हैं तो वहीं कुछ नुकसान भी.

कम मात्रा में करें सेवनः डॉ. अमृता साहा बताती हैं कि, करेला एक हेल्दी सब्जी है, जो कई बीमारियों में काम आती है. इसका सेवन प्रेग्नेंसी में सुरक्षित हो सकता है, लेकिन जिन महिलाओं को किसी प्रकार भी एलर्जी या सेंसिटिविटी है उन्हें इसका सेवन करने से बचना चाहिए. हालांकि, नॉर्मल प्रेग्नेंसी में भी इसका सेवन कम और डॉक्टर की सलाह से किया जा सकता है.

हाई फोलेट कंटेंटः डॉ. अमृता साहा के मुताबिक, करेले में फोलेट उचित मात्रा में पाया जाता है, जोकि किसी भी प्रेग्नेंट महिला के लिए जरूरी है. दरअसल, ये मिनरल बच्चे को संभावित न्यूरल ट्यूब डिफेक्ट से सुरक्षित रखने में मदद कर सकता है.

हाई फाइबर कंटेंटः करेले की सब्जी फाइबर की भी अच्छी स्रोत मानी जाती है. ऐसे में इसे खाने से क्रेविंग को काफी हद तक कम किया जा सकता है. इसके अलावा, प्रेग्नेंसी में भी करेला आपको स्लिम रहने में मददगार हो सकता है.

कब्ज में फायदेमंदः कई महिलाओं में प्रेग्नेंसी के दौरान कब्ज और बवासीर की समस्या हो सकती है. इस समस्या से निजात पाने के लिए फाइबर युक्त करेले का सेवन किया जा सकता है. साथ ही करेले में एंटी-डायबिटिक गुण होते हैं, जो प्रेग्नेंसी में बढ़ने वाले ब्लड शुगर लेवल को कंट्रोल कर सकता है.

प्रेग्नेंसी में करेले से नुकसानः करेले में रेजिन, कुनैन और ग्लाइकोसाइड कंपोनेंट्स होते हैं. ये ऐसे पदार्थ हैं, जो शरीर में टॉक्सिसिटी को बढ़ा सकते हैं. इससे पेट में दर्द, उल्टी और लाल चकत्ते हो सकते हैं. साथ ही, करेले के ज्यादा सेवन से पेट संबंधी समस्याएं जैसे- डायरिया, पेट में ऐंठन और दस्त भी हो सकते हैं. ऐसे में जरूरी है कि बिना डॉक्टर की सलाह से इसका सेवन न करें।

> डॉ. अमृता साहा बताती हैं कि, करेला एक हेल्दी सब्जी है, जो कई बीमारियों में काम आती है. इसका सेवन प्रेग्नेंसी में सुरक्षित हो सकता है, लेकिन जिन महिलाओं को किसी प्रकार भी एलर्जी या सेंसिटिविटी है उन्हें इसका सेवन करने से बचना चाहिए. हालांकि, नॉर्मल प्रेग्नेंसी में भी इसका सेवन कम और डॉक्टर की सलाह से किया जा सकता है.

प्रोटीन से भरपूर बाजरा देगा शरीर को कई फायदे, हार्ट भी रहेगा स्वस्थ

गेंहू-चावल की जगह आप बाजरे को अपनी डाइट में शामिल कर सकते हैं, इस को सूपर फूड भी कहा जाता है। जहां चावल में लगभग 82 % कार्बोहाइड्रेट पाया जाता है वहीं गेंहू में 76% और बाजरे में 78% कार्बोहाइड्रेट मौजूद होता है। इसके अलावा बाजरे में कॉम्पलेक्स, कार्बोहाइड्रेट, फाइबर, प्रोटीन, एंटीऑक्सीडेंट्स, विटामिन बी जैसे कई सारे पोषक तत्व पाए जाते हैं जो स्वास्थ्य के लिए बेहद लाभकारी माने जाते हैं। इसका सेवन करने से पेट लंबे समय तक भरा रहता है। इसके अलावा यह खून में चीनी की मात्रा बढ़ने से भी रोकता है। बाजरे का सेवन करने से डायबिटीज कंट्रोल और हार्ट हेल्दी रखने में मदद मिलती है। तो चलिए आपको बताते हैं इसे खाने से सेहत और क्या-क्या फायदे होते हैं...

नाश्ते में खाने से मिलेगा फायदा

एक्सपर्ट्स की मानें तो यदि बाजरे का सेवन सही समय पर किया जाए तो शरीर को ज्यादा स्वास्थ्य लाभ मिलते हैं। ब्रेकफास्ट के तौर पर आप इसका सेवन कर सकते हैं। इससे आप सारा दिन एनर्जेटिक रहेंगे और आपका पेट भरा हुआ रहेगा। इसके अलावा दोपहर के भोजन में गेंहू या फिर चावल की जगह आप इसका सेवन कर सकते हैं। रात में बाजरे का सेवन करने से पाचन में मदद मिलती है। इसमें फाइबर काफी अच्छी मात्रा में मौजूद होता है जिससे आपको रात में काफी अच्छी नींद आती है।

अच्छी मात्रा में मौजूद होता है प्रोटीन

बाजरे में लगभग 8-12 ग्राम प्रोटीन, फॉक्सटेल बाजरे में 10-12 ग्राम प्रोटीन और रागी में करीबन 7-10 ग्राम प्रोटीन मौजूद होता है। इसके अलावा बाजरे की अलग-अलग किस्म में भी प्रोटीन काफी अच्छी मात्रा

में मौजूद होता है। गेंहू या चावल की जगह आप इसका सेवन कर सकते हैं।

मिनरल्स और विटामिन्स युक्त

बाजरा और रागी में बी1, बी2, बी3, बी5, बी6 और बी9 काफी अच्छी मात्रा में पाया जाता है। यह विटामिन्स एनर्जी बढ़ाने, पाचन और रेड ब्लड सेल्स कोशिकाएं बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसके अलावा रागी में विटामिन-के, ए, कैल्शियम, सेलेनियम और आयरन काफी अच्छी मात्रा में मौजूद होता है। इसके अलावा इसमें कुछ खास एंटीऑक्सीडेंट्स बी सामिल होते हैं जो सुपरऑक्साइज रेडिकल्स का असर कम करते हैं।

हार्ट को रखता है स्वस्थ

एक्सपर्ट्स की मानें तो बाजरे में मैग्नीशियम काफी अच्छी मात्रा में पाया जाता है। यह हार्ट को स्वस्थ रखने के साथ-साथ उसे धड़कने में भी मदद करता है। इसमें पाया जाने वाला प्रोटीन, कार्डियोवेस्कुलर टिश्यू को बचाने में मदद करता है। इसके अलावा इसमें पाया जाने वाला विटामिन-बी3 हार्ट डिजीज का खतरा कम करके ऑक्सीडेटिव स्ट्रेस कम करने में मदद करता है।

अकेलेपन से नहीं उबर पा रहीं? 5 टिप्स की मदद से खुद को रखें पॉजिटिव, डिप्रेशन एंजाइटी भी रहेंगे दूर

लोगों के बीच रहते हुए भी खुद में अकेलापन महसूस करना आपके मेंटल हेल्थ को काफी प्रभावित कर सकता है. खुद को अगर आप ऐसे हालात से बाहर निकालना चाहती हैं तो कुछ टिप्स की मदद लें.

अकेलापन, हालात नहीं, एक तरह की फीलिंग है जिसमें इंसान भीड़ में रहकर भी खुद को अलग थलग पाता है. यह आपके मेंटल फिजिकल हेल्थ को सीधे तौर पर प्रभावित करता है और अगर आप इस इमोशन को सही तरीके से डील ना कर पाए तो स्ट्रेस, डिप्रेशन, एंजाइटी की गिरफ्त में आसानी से आ सकते हैं. यही नहीं, अधिक दिनों तक अगर आप इस हालात में रहे तो ये आपके शारीरिक सेहत को भी प्रभावित करने लगता है. अगर आप भी इस तरह अकेलापन महसूस कर रहे हैं तो कुछ तरीके हैं जिसकी मदद से आप सकारात्मक महसूस कर सकते हैं.

अकेलेपन को ऐसे करें दूर

क्लब या क्लास ज्वाइन करें

वेरीवेल माइंड के मुताबिक, अगर आप खुद को अलग थलग महसूस करें तो जरूरी है कि आप अपने लिए एक ऐसा ग्रुप ढूंढ लें जिसमें आपके जैसे लोग हों. इसके लिए आप अपने आसपास कोई क्लब या हॉबी क्लास ज्वाइन करें. इस तरह आप एक ग्रुप का हिस्सा बन पाएंगे और खुद को अकेलेपन से बाहर निकाल पाएंगी.

इन उपायों से दूर होगी घर की निगेटिव एनर्जी आगे देखें...

वॉलेंटियरिंग करें

अगर आप अपनी जिंदगी से सेटिस्फाई रहेंगी तो आप बेहतर महसूस कर पाएंगी. इसके लिए आप उन जगहों पर वॉलेंटियरिंग कर सकते हैं जहां काम कर आप लोगों की मदद कर सकें और दूसरों की जिंदगी को आसान बना पाएं. यह भावना आपके अकेलेपन को दूर करने का काम कर सकती है.

ऑनलाइन सपोर्ट

आप सोशल मीडिया का सकारात्मक तरीके से इस्तेमाल करें और फीयर ऑफ मिसिंग आउट वाली फीलिंग से बाहर निकालें. यहां आकर आप लोगों से जुड़ सकते हैं और बातचीत का हिस्सा बन सकते हैं.

अपनों से मिलें जुलें

अगर आप बेहतर महसूस ना कर पा रही हैं तो अपने उन परिवार के सदस्यों, पुराने दोस्तों या टीचर आदि से मिलने का प्लान बनाएं जिनके साथ आप पॉजिटिव महसूस करती हैं. यकीन मानिए, आप ऐसे लोगों से मिलकर बेहतर महसूस करेंगे और आपका मेंटल हेल्थ भी अच्छा होगा.

सेल्फ केयर

खुद के लिए वक्त निकालना शुरू करें. वॉक पर जाएं, रिलैक्स करें, भरपूर नींद लें, अपने पसंद की चीजों को बनाएं और खाएं. डॉक्टर से मिलें, चेकअप कराएं और जरूरी सप्लीमेंट का सेवन करें और खुद को व्यस्त रखें.

पीरियड्स में भयंकर दर्द होना इस बीमारी का संकेत ! इन 5 लक्षणों को कभी न करें नजरअंदाज, वक्त रहते लगाएं पता

एंडोमेट्रियोसिस एक गंभीर समस्या है, जो महिलाओं के गर्भाशय में पैदा हो सकती है. इस बीमारी से जूझ रही महिलाओं को असहनीय दर्द का सामना करना पड़ता है. इस बीमारी को कंट्रोल करने के लिए कई बार सर्जरी का सहारा लेना पड़ता है. हालांकि इसके लक्षण कॉमन होते हैं, जिनसे इस बीमारी का पता लगा सकते हैं.

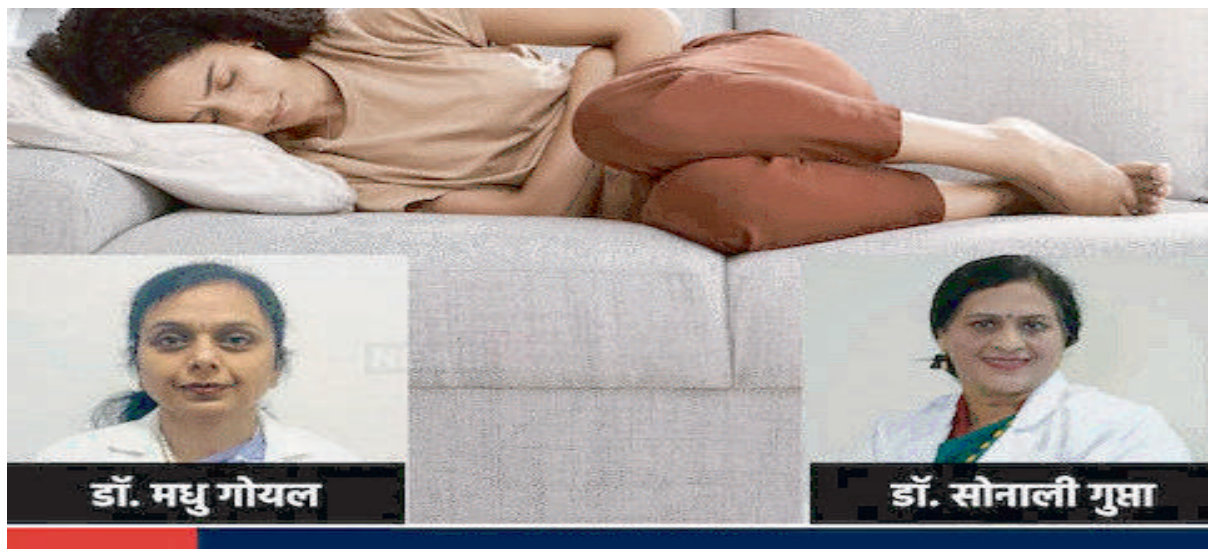

अगर बीमारियों का पता सही वक्त पर लग जाए, तो उनका इलाज कर लोगों को काफी राहत मिल सकती है. हालांकि कई बीमारियां ऐसी होती हैं, जिनके शुरुआत में स्पष्ट लक्षण नजर नहीं आते हैं. इसकी वजह से लोगों को इसका लंबे समय तक पता ही नहीं लग पाता है. ऐसी ही एक बीमारी एंडोमेट्रियोसिस है, जो महिलाओं के गर्भाशय और अन्य अंगों में फैल जाती है. इससे उन्हें भयंकर दर्द का सामना करना पड़ता है और कई बार इसकी वजह से वे मां बनने का सुख प्राप्त नहीं कर पाती हैं. आखिर एंडोमेट्रियोसिस क्या है और इसका पता कैसे लगाया जाए? इन सभी सवालों के जवाब एक्सपर्ट्स से जान लेते हैं.

नई दिल्ली के फोर्टिस ला फेम हॉस्पिटल के गायनेकोलॉजी एंड आबस्टिट्रिशन डिपार्टमेंट की डायरेक्टर डॉ. मधु गोयल ने News18 को बताया कि महिलाओं के गर्भाशय में एक लाइनिंग होती है, जिसे एंडोमेट्रियम कहते हैं. जब इस जैसा टिश्यू (Tissue) गर्भाशय के बाहर अंडाशय, पेरिटोनियम या फैलोपियन ट्यूब में मिले, तब इस कंडीशन को एंडोमेट्रियोसिस कहा जाता है. इस तरह का टिश्यू शरीर के किसी भी हिस्से में मिल सकता है. यह आंत, अपेंडिक्स, फेफड़े, लिवर और ब्रेन में भी मिल सकता है.

डॉक्टर मधु कहती हैं कि पीरियड्स के दौरान बहुत तेज दर्द आमतौर पर एंडोमेट्रियोसिस का मुख्य लक्षण होता है. यह दर्द इतना गंभीर होता है कि कई बार महिलाएं इसकी वजह से चलने-फिरने में भी परेशानी महसूस करती हैं. इस बीमारी से महिलाओं की जिंदगी बुरी तरह प्रभावित होती है. इस बीमारी की वजह से महिलाओं को पीरियड से पहले, पीरियड के समय या इसके बाद भयंकर दर्द होता है. इसे कंट्रोल करने के लिए पेनकिलर्स और इंजेक्शन का सहारा लेना पड़ता है.

एक्सपर्ट की मानें तो एंडोमेट्रियोसिस की वजह से होने वाला दर्द बेहद परेशान करने वाला हो सकता है. यह दर्द पीरियड्स के बीच भी हो सकता है. इसके अलावा यौन संबंध बनाने में अत्यधिक दर्द भी इस बीमारी का संकेत हो सकता है. अगर किसी महिला को प्रेग्नेंसी में दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है, तो यह भी एंडोमेट्रियोसिस का संकेत हो सकता है.

इस बीमारी की वजह से महिलाएं डिप्रेशन में भी जा सकती हैं. एंडोमेट्रियोसिस की वजह से 50 प्रतिशत मरीजों में फर्टिलिटी संबंधी समस्याएं भी हो सकती हैं और उन्हें फर्टिलिटी बढ़ाने वाली सर्जरी या अन्य ट्रीटमेंट की जरूरत हो सकती है.चिंता की बात यह है कि कई बार इस बीमारी का पता स्कैन के जरिए नहीं लग पाता है. कई बार स्कैन सामान्य होने पर भी एंडोमेट्रियोसिस हो सकता है.

ग्रेटर नोएडा के फोर्टिस हॉस्पिटल के गायनेकोलॉजी डिपार्टमेंट की एसोसिएट डायरेक्टर डॉ. सोनाली गुप्ता ने News18 को बताया कि एंडोमेट्रियोसिस एक गंभीर समस्या है, जिसे इलाज के जरिए कंट्रोल किया जाता है. इस बीमारी का ट्रीटमेंट पेशेंट के लक्षणों पर आधारित होता है. कई बार पेन किलर्स, गर्भनिरोधक गोलियां, डायनोजेस्ट, इंजेक्शन या इंट्रा गर्भाशय उपकरणों से इसका इलाज किया जाता है. जब परेशानी ज्यादा बढ़ जाए, तो सर्जरी के जरिए एंडोमेट्रियोसिस का इलाज किया जाता है.

डॉक्टर सोनाली के मुताबिक कई बार एंडोमेट्रियोसिस से निजात पाने के लिए गर्भाशय को ही सर्जरी कर शरीर से बाहर निकाल दिया जाता है. अगर सही वक्त पर इस बीमारी का पता चल जाए, तो इसे बेहतर तरीके से कंट्रोल किया जा सकता है. एक्सपर्ट की मानें तो एंडोमेट्रियोसिस के लक्षण इतने अस्पष्ट हो सकते हैं कि इसका पता लगाना मुश्किल हो जाता है. इसका सही समय पर पता लगाने के लिए नियमित पेल्विक परीक्षण और जागरुकता बहुत जरूरी है.

दिल से लेकर दातों तक को मजबूत करती है ब्रॉकली, जानिए इसे खाने के अनेक फायदे...

ब्रोकली वैसे दिखने में तो गोभी जैसा नजर आता है, लेकिन उससे कहीं ज्यादा फायदेमंद होती है। इसमें भरपूर मात्रा में प्रोटीन पाया जाता है। बता दें प्रोटीन भी हमारे शरीर के लिए बहुत जरूरी है। इसलिए प्रोटीन की पूर्ति के लिए इसका सेवन कर सकते हैं। साथ ही इसमें कैल्शियम, कार्बोहाइड्रेट, आयरन, विटामिन ए, सी और कई दूसरे पोषक तत्व पाए जाते हैं. इसमें कई प्रकार के लवण भी पाए जाते हैं, जो शुगर लेवल को संतुलित बनाए रखने में मददगार हैं....

इम्यूनिटी को बूस्ट करता है ब्रोकली

ब्रोकली में विटामिन सी प्रचूर मात्रा में पाई जाती है। विटामिन सी शरीर के इम्यून सिस्टम को बूस्ट करने और संक्रमण से बचाने में मददगार है।

दिल को रखती है स्वस्थ

इसमें पाए जाने वाले सेलेनियम और ग्लूकोसिनोलेट्स जैसे तत्व दिल को स्वस्थ रखने वाले प्रोटीन को बढ़ाने का काम करते हैं। इसलिए यह दिल की सेहत के लिए बहुत फायदेमंद है।

लीवर को करता है मजबूत

ब्रोकली को डाइट में शामिल करने से लिवर क्षति का जोखिम कम होता है। साथ ही फैटी लिवर की समस्या में लाभ मिलता है। इसलिए लीवर को मजबूत बनाने के लिए ब्रोकली का सेवन करना चाहिए।

प्रेग्नेंट महिलाओं के लिए भी लाभकारी

ब्रोकली में मौजूद प्रोटीन, आयरन, फोलेट और विटामिन सी जैसे पोषक तत्व प्रेग्नेंट महिलाओं के लिए जरूरी माने जाते हैं। इसलिए प्रेग्नेंट महिलाओं को इसका सेवन जरूर करना चाहिए।

हड्डियों और दांतों की सेहत का रखती है ख्याल

इसमें कैल्शियम प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। जो हड्डियों और दांतों के लिए बहुत लाभकारी है।

आपका आशीर्वाद चाहता हूं...जब खुद वकील बन जिरह करने लगे केजरीवाल

केजरीवाल ने कहा कि मेरे घर पर कई मंत्री आते हैं। बातचीत करते हैं। क्या ये बयान एक पद पर बैठे मुख्यमंत्री को गिरफ्तार करने के लिए पर्याप्त है? एसजी राजू ने बीच में केजरीवाल को टोका। लेकिन केजरीवाल ने कहा कि मैं आपका आशीर्वाद चाहता हूं। मुझे पांच मिनट तक बोलने दीजिए।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। अरविंद केजरीवाल अब 1 अप्रैल तक ईडी की कस्टडी में रहेंगे। दिल्ली की एक अदालत ने आबकारी नीति मामले में मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की ईडी की हिरासत एक अप्रैल तक बढ़ा दी। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने आम आदमी पार्टी (आप) के प्रमुख केजरीवाल की सात दिन की हिरासत का अनुरोध किया, लेकिन अदालत ने कहा कि उन्हें एक अप्रैल को दिन में 11 बजे अदालत में पेश करना होगा। ईडी ने केजरीवाल को राउज एवेन्यू अदालत की विशेष न्यायाधीश कावेरी बावेजा के समक्ष पेश किया क्योंकि उनकी छह दिन की वर्तमान हिरासत बृहस्पतिवार को समाप्त हो रही थी। ईडी ने हिरासत के लिए नयी अर्जी में कहा कि हिरासत में पूछताछ के दौरान पांच दिन तक मुख्यमंत्री के बयान दर्ज किए गए और वह जवाब देने में टालमटोल कर रहे थे। ईडी ने कहा कि हिरासत अवधि के दौरान मामले से संबंधित तीन अन्य व्यक्तियों के बयान भी दर्ज किए गए। 28 मार्च को उनकी ईडी की कस्टडी खत्म हो रही थी। इसी दौरान दिल्ली के राउथ एवेन्यू कोर्ट में सुनवाई भी चल रही थी। सुनवाई के दौरान आज केजरीवाल खुद ही अपने वकील बन गए। उन्होंने खुद कोर्ट रूम में जिरह की। पीएमएलए की स्पेशल कोर्ट में जस्टिस कावेरी बावेजा ने सुनवाई की शुरुआत की। ईडी की तरफ से एसजी राजू ने अपना तर्क रखा कि हमें और लोगों से इनका आमना-सामना करवाना है। इसलिए हमें और कस्टडी चाहिए। फिर दिल्ली सीएम के वकील गुप्ता ने कहा कि केजरीवाल खुद अपनी बात कोर्ट के समक्ष रखना चाहते हैं। केजरीवाल ने अपना पहला प्वाइंट रखते हुए कहा कि ये केस 2 साल से चल रहा है। अगस्त 2022 को सीबीआई का केस फाइल हुआ था। फिर ईसीआईआर फाइल हुई थी। मुझे गिरफ्तार किया गया है। न तो मुझे किसी कोर्ट ने दोषी करार दिया है। न ही आरोप तय हुए है। ईडी लगभग 25 हजार पेज की केस फाइल कर चुकी है और बहुत सारे गवाह को ला चुकी है।

जस्टिस कावेरी ने बीच में टोकते हुए कहा कि क्या आप लिखित में ये सब दे सकते हैं तो मैं इसे रिकॉर्ड पर रखूंगी। तो केजरीवाल ने कहा कि पहले मुझे बोल लेने दीजिए। फिर केजरीवाल ने कहा कि मेरे घर पर कई मंत्री आते हैं। बातचीत करते हैं।

क्या ये बयान एक पद पर बैठे मुख्यमंत्री को गिरफ्तार करने के लिए पर्याप्त है? एसजी राजू ने बीच में केजरीवाल को टोका। लेकिन केजरीवाल ने कहा कि राजू जी मैं आपका आशीर्वाद चाहता हूं। मुझे पांच मिनट तक बोलने दीजिए। केजरीवाल ने कहा कि कोई किसी का नाम ले लेगा तो आप गिरफ्तार कर लोगे क्या? राघव मंगुटा के सात बयान हैं, उनमें से 6 में मेरा नाम नहीं है। सातवें में जब वो मेरे खिलाफ बयान देता है तो उसे जमानत मिल जाती है। शराब घोटाले का पैसा कहा हैं?

सुप्रीम कोर्ट के जजमेंट को रेफर करते हुए अरविंद केजरीवाल कहते हैं कि ये जो 100 करोड़ बोल रहे हैं। वो असल में कही नहीं है। ये असली शराब घोटाला ईडी की जांच के बाद शुरू होता है। फिर केजरीवाल कहते हैं कि शरत रेड्डी ने 55 करोड़ बीजेपी को डोनेट किया और मेरे पास सबूत है कि ये मनी ट्रेल चल रहा है। इसके साथ ही केजरीवाल ने कहा ईडी जितना दिन चाहे रिमांड पर रख सकती है। हमें कोई दिक्कत नहीं है। ईडी की तरफ से राजू ने कहा कि जैसे आम आदमी है वैसे ही सीएम है। अगर कोई गलती हुई है तो गिरफ्तारी हो सकती है। ईडी की तरफ से कहा गया कि केजरीवाल आप के इंचार्ज है। गोवा के चुनाव में पैसे का इस्तेमाल हुआ है।केजरीवाल के वकील गुप्ता ने कहा कि क्या मैं इस पर जवाब दे सकता हूं। ईडी ने कहा कि आपने रिस्पॉड तो कर दिया ये आप्रांसगिक है। फिर कहा कि क्या आप्रांसगिक और प्रासंगिक है ये कोर्ट तय करेगा। जज ने कहा कि कृप्या अपनी आवाज को थोड़ा कम रखें। मैंने सभी को सुना है।

दिल्ली में राष्ट्रपति शासन? कार्यपालिका एक्शन में...

परिवहन विशेष। एसडी सेठी।

नई दिल्ली। दिल्ली सरकार के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की मुसीबतें कम होने का नाम नही ले रही है। कथित शराब घोटाले में डिप्टी सीएम मनीष सिसौदिया, सत्येंद्र जैन, संजय सिंह जेल में जा चुके है। मगर आज राउज एवेन्यू कोर्ट ने सीएम अरविंद केजरीवाल को 1 अप्रैल तक के लिए ईडी के रिमांड पर भेज दिया है। ईडी के वकील ने कोर्ट को बताया कि केजरीवाल पूछताछ में सहयोग नहीं कर रहे है। उनसे डिजिटल, डिवाइस समेत 2 मोबाइल फोन के पासवर्ड लेने हैं। इस पर कोर्ट ने इस मामले को न्यायिक क्षेत्र से बाहर बताया। कोर्ट ने कहा कि यह मामला कार्यपालिका के अधिकार क्षेत्र में आती है। अदालत ने उपराज्यपाल के पाले में डालकर अपना पल्ला झाड लिया। अब इसके बाद कार्यपालिका भी एक्शन मोड पर आ गयी है। दरअसल सीएम केजरीवाल के ईडी की रिमांड पर होने से संवैधानिक हालत पैदा हो गए हैं। इसी के मद्देनजर ही दिल्ली में राष्ट्रपति शासन लगाने पर कार्यपालिका उपराज्यपाल पर दबाव आ गया है। अब इस मामले में कोर्ट ने भी कार्यपालिका को भी एक्शन मोड में ला दिया है। इस हिसाब से दिल्ली में राष्ट्रपति शासन लगाने तक की बात सामने आ रही है।

सीएम केजरीवाल की गिरफ्तारी और दिल्ली सरकार के मंत्रियों की बयानबाजी से और बढ़ सकती हैं मुसीबतें

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। दिल्ली के मुख्यमंत्री को कल यानी बुधवार 27 मार्च को भी राहत नहीं मिली. दिल्ली हाईकोर्ट में दो बार सुनवाई हुई और शाम को कोर्ट ने अपना फैसला सुना दिया. केजरीवाल को फिलहाल ईडी की हिरासत में ही रहना होगा.

इस बीच जेल से ही जारी हुए उनके दो ऑर्डर की भी चर्चा है, जिसको लेकर ईडी ने सख्त आपत्ति जताई है और केजरीवाल पर मुकदमा भी दर्ज हुआ है. आम आदमी पार्टी इस बात पर अड़ी हुई है कि जेल से ही केजरीवाल सरकार चलाएंगे. दिल्ली के एलजी ने कल ही यानी बुधवार 27 मार्च को इसे लेकर कठोर टिप्पणी की है और कोर्ट में एक जनहित याचिका भी इसके लिए दायर की गयी है कि अरविंद केजरीवाल को दिल्ली के मुख्यमंत्री पद से हटाया जाए.

दिल्ली हाईकोर्ट का स्पष्ट रुख

कल एक नयी बात कोर्ट में देखने को मिली. अमूमन न्यायालय में किसी भी वादी या प्रतिवादी की तरफ से एक अधिवक्ता ही पेश होता है, लेकिन इस मामले में केजरीवाल की तरफ से तीन सीनियर एडवोकेट मौजूद थे. अंतरिम राहत और जमानत के लिए उन्होंने अपनी पेटिशन की बातें ही दुहराई. जब बहस हो रही थी, तो ईडी के वकील ए राजू इस बात पर नाराज भी हुए कि अगर केजरीवाल तीन वकील कर सकते हैं, तो ईडी भी 10 वकील कर सकते हैं, ये केवल कोर्ट का वक्त जाया करने जैसा है. कोर्ट ने अंतरिम राहत देने से मना कर दिया और उन्होंने कहा कि इस पर राहत देना तो ऐसा होगा कि वो 'मेन पेटिशन' पर ही फैसला दे रहे हैं, तो वह बिना ईडी के जवाब दिए यह नहीं कर सकती. ईडी का अनुरोध था कि वह पेटिशन उनको चूंकि शनिवार (23 मार्च) को मिली थी, इसलिए उन्हें पढ़ने और जवाब देने का समय नहीं मिला. इसीलिए, कोर्ट ने अंतरिम राहत नहीं दी और अगली तारीख 2 अप्रैल को दी है. तब तक ईडी को जवाब देने का निर्देश दिया है.

वकीलों की हड़ताल

देश का इतिहास रहा है कि जब भी संवैधानिक संकट आया है, तो देश के वकीलों ने प्रतिरोध किया है. हालांकि, सुप्रीम कोर्ट ने साफ-साफ निर्देश कई जगहों पर दिया है कि आप हड़ताल (स्ट्राइक) कब कर सकते हैं, कैसे कर सकते हैं और कहां कर सकते हैं. स्ट्राइक या हड़ताल का अर्थ व्यवधान होता है, आप काम को रोक रहे हैं. ऐसी परिस्थित क्या आ गयी थी कि आज वकीलों को काम रोकना पड़ेगा? ऐसा लगता नहीं है, क्योंकि हाईकोर्ट ने तो संज्ञान लिया है, सुनवाई चल रही है. ऐसे में यह काम गलत है. बार काउंसिल ऑफ इंडिया के चेयरमैन मदन मिश्रका जी ने बाकायदा पत्र लिखकर यह कहा है कि उनके संज्ञान में यह बात आयी है और यह गलत है, गैर-कानूनी है. दिल्ली हाईकोर्ट में जो न्यायाधीश इस मामले की सुनवाई कर रही थीं, उनके सामने जब इसकी चर्चा हुई तो उन्होंने भी साफ कहा कि अगर किसी तरह के कानूनी हड़ताल की बाद होती है, तो उसके कानूनी परिणाम भी आम आदमी पार्टी की लीगल सेल को भुगतना होगा.

जेल के अंदर से ऑर्डर गैर-कानूनी

अरविंद केजरीवाल और उनकी पार्टी जो कर रही है, उसे इसी तरह देख सकते हैं कि घोटाले

करनेवाला आदमी घोटालेबाज ही होता है. ये जेल के अंदर से भी स्कैम कर रहे हैं. जैसा ईडी ने कहा है, ये जेल के अंदर से कुछ भेज नहीं सकते हैं. इनके पास कलम और कागज की पहुंच नहीं है. इसके अलावा यह भी देखना चाहिए कि उन्होंने आदेश किस संदर्भ में भेजे हैं? पानी और सीवर के लिए. यानी, जब आप साढ़े 9 साल तक सत्ता में रहे, तब आपको इसकी याद नहीं आयी और आज आपको दिल्ली की फिक्र होने लगी है? वह दरअसल अपनी ही गलतियों को छुपाने के लिए और भी गलतियां करते जा रहे हैं. इसकी वजह एक ही है और वह है- सुर्खियों में बने रहना. इसलिए, वह बड़े पत्रकारों से अपने बारे में लिखवा रहे हैं, उनकी पत्नी सुनीता केजरीवाल अपने रिकॉर्डेड संदेश प्रसारित कर रही हैं. वह टीवी पर आ रही है, मनीष सिसोदिया के पुराने रिकॉर्डेड वीडियोज अब शेयर किए जा रहे हैं. इसका सीधा सा अर्थ ये है कि सब कुछ प्रोपैगैंडा के लिए किया जा रहा है. सीबीआई ने जब से आबकारी नीति में मामला दर्ज किया था, तब से इन लोगों को पता था कि आज या कल ये हिरासत में लिए ही जाएंगे. इन्होंने उसकी व्यवस्था तैयार कर रखी थी. इस तरह के प्रोपैगैंडा पर सख्त कार्रवाई होनी चाहिए और केजरीवाल को सीएम बने रहने का कोई मौलिक, नैतिक और वैधानिक अधिकार नहीं है. आज (गुरुवार 28 मार्च) ही दरअसल उस जनहित याचिका पर भी सुनवाई है, जिसमें अरविंद केजरीवाल को बर्खास्त करने के लिए प्रार्थना की गयी है, तो आज उसका भी फैसला हम देखेंगे. दिल्ली के एलजी ने भी बुधवार को कहा था कि जेल से केजरीवाल को ऑपरेट करने की अनुमति नहीं दी जा सकती है.

आतिशी की प्रेस कांफ्रेस में गलतबयानी

जब भी कोई आदेश किसी न्यायालय से दिया जाता है, तो उसका कानून है कि उसमें प्रार्थी यानी वादी (पेटिशनर) की बातों के साथ ही याचिका में उल्लिखित बातें और प्रतिवादी (रेस्पांडेंट) की भी बातें लिखी जाती हैं. इस मामले में चूंकि प्रतिवादी ने अभी तक जवाब नहीं दिया है, जो इस मामले में ईडी हैं, तो उसकी बातें होने का तो सवाल ही नहीं है. बहुत सारी चीजे उसमें लिखी गयी हैं.

सीनियर एडवोकेट अभिषेक मनु सिंघवी ने जो कहा है, जो दलीलें दी हैं, उनको भी उसमें लिखा गया है. आतिशी मार्लेना ने जो प्रेस कांफ्रेंस की है, उसमें जो दलीलें उनके वकील की तरफ से दी गयी हैं, उसको भी उन्होंने जान-बूझकर, गलत संदर्भ में, कोर्ट का नाम लेते हुए कहा है. जैसे कि एक जगह कोर्ट के आदेश में यह लिखा गया है कि कोर्ट दलीलों को लेकर साकांक्ष है और इसमें कुछ राजनीतिक बातें भी हो सकती हैं, लेकिन यह बात तो याचिका में दर्ज है. इसे सीधे कोर्ट के हवाले से पेश करना तो गलत है. एक और जगह उनके सीनियर एडवोकेट अभिषेक मनु सिंघवी की बातों का बाकायदा उनके नाम के साथ उल्लेख है. उसमें लिखा है कि अभिषेक सिंघवी ने बहुतेरे गंभीर सवाल उठाए हैं, क्या इस गिरफ्तारी का क्या राजनीति से कोई संबंध है? आतिशी ने इसको भी मिस-कोट किया है. उन्होंने इसको इस तरह पेश किया है, जैसे ये बातें कोर्ट ने कही हैं, या अपने आदेश में बतायी हैं. यह न केवल बरगलाने वाली, झूठी और आधारहीन बात है, बल्कि यह गंभीर आपराधिक मानहानि है, न्यायालय की, इसका कोर्ट को संज्ञान लेना चाहिए और आतिशी पर कार्रवाई होनी चाहिए. ऐसा ही राहुल गांधी ने तब किया था, जब वह राफेल को लेकर विवाद कर रहे थे. उन्होंने तब सुप्रीम कोर्ट को गलत तौर पर उद्धृत किया था और बाद में उनको बाकायदा माफी मांगनी पड़ी थी. आतिशी को भी माफी मांगनी चाहिए, अन्यथा यह मामला कोर्ट में ले जाना चाहिए. यह एक मंत्री से अपेक्षित नहीं है.

केजरीवाल का भविष्य

अभी तक तो केजरीवाल को इस्तीफा दे देना चाहिए था. पहले के भी सारे उदाहरण हैं. चाहे वह तमिलनाडु में जयललिता का हो, झारखंड में हेमंत सोरेन हों, बिहार में लालू प्रसाद हों, जब भी जो भी जेल गए हैं, तो उन्होंने इस्तीफा दे दिया और किसी और को मुख्यमंत्री बना दिया. दिल्ली की 70 में 62 सीटें चूंकि आम आदमी पार्टी के पास है, तो केजरीवाल और उनके दल को नया मुख्यमंत्री चुनने में भी इतनी समस्या नहीं होती. हालांकि, वह अड़े हुए हैं कि जेल से ही सरकार चलाएंगे, लेकिन अच्छा होता कि केजरीवाल परंपरा का पालन करते और जबरन रस्साकशी नहीं करते. इस संदर्भ में एलजी का बयान महत्वपूर्ण है. एलजी ने कहा है कि जेल से वह सरकार को नहीं चलाने देंगे. हाईकोर्ट केजरीवाल को राहत नहीं दे रही है और केंद्र सरकार भी सख्त है. खासकर, केजरीवाल को यह बात इसलिए भी समझनी चाहिए क्योंकि यह जो सरकार वह चला रहे हैं, वह पूर्ण रूप से राज्य की सरकार भी नहीं है, यह केंद्रशासित प्रदेश है. यहां केंद्र की काफी दखल है और चूंकि सेवा दिल्ली के एलजी के अंदर ही आता है और मुख्यमंत्री जो काम कर रहे हैं, वह भी सेवा (सर्विसेज) के तहत ही आएगा, तो यह दुखद भले हो, लेकिन केजरीवाल की बर्खास्तगी ही अब आगे दिख रही है।

अरविंद केजरीवाल क्या जेल में रहते हुए भी सरकार चला सकते हैं, क्या कहता है क़ानून?

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। दिल्ली हाई कोर्ट ने गुरुवार को मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को पद से हटाए जाने की मांग को लेकर दायर की गई याचिका खारिज कर दी है. हाई कोर्ट के एक्टिंग चीफ़ जस्टिस मनमोहन और जस्टिस मनमीत प्रीतम सिंह अरोड़ा की खंडपीठ ने पिटीशन खारिज करते हुए कहा कि याचिकाकर्ता ऐसे किसी क़ानूनी प्रावधान को सामने रखने में नाकाम रहे हैं जो किसी गिरफ्तार मुख्यमंत्री को पद पर बने रखने से रोक लगाता हो. बेंच ने कहा, ₹दिखाइए कि कहां पर रोक है. कोई कानूनी प्रतिबंध दिखाएं जिसके लिए आप वकालत कर रहे हैं.

दिल्ली हाई कोर्ट में दायर की गई ये याचिका कानूनी हलकों में उठ रहे उस सवाल को रेखांकित करती है कि क्या कोई पदासीन मुख्यमंत्री गिरफ़्तार होने के बाद भी सरकार का कामकाज संभाल सकता है या नहीं? हालांकि दिल्ली के उपराज्यपाल वीके सक्सेना ये साफ़ कर चुके हैं कि अरविंद केजरीवाल को ऐसा करने की इजाजत नहीं दी जाएगी.

इस सवाल की वजह भी है. दिल्ली के कथित शराब नीति घोटाले में प्रवर्तन निदेशालय ने अरविंद केजरीवाल को गिरफ्तार किया है. ईडी की हिरासत के दौरान ही दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने दो आधिकारिक निर्देश जारी किए थे.

अरविंद केजरीवाल पर आरोप

अरविंद केजरीवाल को ईडी ने 21 मार्च को ग़िरफ़्तार किया था और वो 28 मार्च तक ईडी की हिरासत में हैं. गुरुवार को उनकी हिरासत की अवधि पहली अप्रैल तक के लिए बढ़ा दी गई.

अरविंद केजरीवाल की ग़िरफ़्तारी के बाद दिल्ली सरकार में मंत्री आतिशी ने कहा कि वो दिल्ली के मुख्यमंत्री बने रहेंगे.

वहीं, पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान ने 24 मार्च को कहा था कि अगर केजरीवाल को जेल भेजा गया तो वो अदालत से जेल में कार्यालय बनाने की अनुमति मांगेंगे ताकि वह जेल से सरकार चला सकें. हालांकि, भारतीय जनता पार्टी लगातार मांग कर रही है कि आरोपों के कारण अरविंद केजरीवाल को मुख्यमंत्री पद से इस्तीफ़ा दे देना चाहिए.

दिल्ली आबकारी नीति में कथित भ्रष्टाचार और अनियमितता के मामले में आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक और दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल पर इस नीति की आड़ में कुछ शराब व्यापारियों को लाभ पहुंचाने का आरोप है और ईडी की चार्जशीट के मुताबिक़ वो 'इस घोटाले के मुख्य साज़िशकर्ता' हैं.

क्या थे केजरीवाल के दो निर्देश?

आम आदमी पार्टी कहती रही है कि उनके नेताओं पर दर्ज मुकदमों का कोई आधार नहीं है. पिछले साल दिसंबर में आम आदमी पार्टी ने 'मैं भी केजरीवाल' नाम से एक हस्ताक्षर अभियान चलाया था.

जिसमें सवाल पूछा गया था कि क्या केजरीवाल को ग़िरफ़्तारी होने की सूरत में इस्तीफा दे देना चाहिए या जेल से सरकार चलानी चाहिए?

दिल्ली के कैबिनेट मंत्री मनीष सिसोदिया और सत्येन्द्र जैन को भी ईडी ने ग़िरफ़्तार किया था. दोनों पहले से ही न्यायिक हिरासत में हैं. दोनों ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया.

ईडी की हिरासत में अपने पहले निर्देश में अरविंद केजरीवाल ने पानी की कमी के कारण लोगों को हो रही समस्याओं के समाधान के लिए जल संसाधन मंत्रालय मंत्री आतिशी को पत्र लिखा.

आतिशी ने अपनी प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि केजरीवाल ने अपने निर्देश में कहा, "मुझे पता चला है कि लोगों को पानी और सीवेज से जुड़ी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है, मैं इसे लेकर चिंतित हूं और मेरे जेल में रहते हुए लोगों को इन समस्याओं का सामना नहीं करना चाहिए.

अपने निर्देश में उन्होंने आवश्यक स्थानों पर पानी के टैंकर भेजने को कहा.

कोर्ट के आदेश के मुताबिक, केजरीवाल हर दिन शाम 6 से 7 बजे तक अपनी पत्नी सुनीता केजरीवाल और पीए बिभव कुमार से मुलाक़ात कर सकते हैं.

इसके साथ ही वे दिन में आधे घंटे के लिए अपने वकीलों से भी मिल सकते हैं.

मंगलवार को दिल्ली के स्वास्थ्य मंत्री सौरभ भारद्वाज ने कहा कि अरविंद केजरीवाल ने ईडी की हिरासत से राष्ट्रीय राजधानी में लोगों की स्वास्थ्य समस्याओं को लेकर एक आदेश जारी किया है.

भारद्वाज के मुताबिक, मुख्यमंत्री ने लिखा कि लोगों को मोहल्ला क्लीनिक में जांच कराने में दिक्कत आ रही है, इसका समाधान किया जाना चाहिए.

क्या कोई मुख्यमंत्री जेल से ही सरकार चला सकता है? बीबीसी ने इस बारे में क़ानूनी विशेषज्ञों से बात की.

क़ानूनी बाधाएं क्या हैं?

संवैधानिक मामलों के विशेषज्ञ और सुप्रीम कोर्ट के वरिष्ठ वकील गोपाल शंकरनारायणन ने अरविंद केजरीवाल के जेल से सरकार चलाने के क़ानूनी पहलुओं पर बीबीसी से बात की.

वो कहते हैं कि, ₹अरविंद केजरीवाल को जेल से अपना काम जारी रखने में कोई क़ानूनी बाधा नहीं है.

₹हिरासत में व्यक्ति को पद से नहीं हटाया जा सकता लेकिन एक बार अपराध सिद्ध हो जाने पर वो किसी संवैधानिक पद पर बने रहने के लिए अयोग्य घोषित हो जाता है.

हालांकि क़ानून के कुछ जानकारों का ये भी कहना है कि क़ानून भले ही इस मुद्दे पर ख़ामोश हो लेकिन देश में जेल से सरकार चलाए जाने का कोई पूर्व उदाहरण नहीं और ये मामला नैतिकता से भी जुड़ा हुआ है.

अतीत में जब भी किसी निर्वाचित सरकार के सत्तारूढ़ मुख्यमंत्री की गिरफ़्तारी की स्थिति पैदा हुई है, उन्होंने इस्तीफा दिया है. इस सिलसिले में सबसे ताज़ा उदाहरण झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन का है.

बीजेपी के नेताओं ने भी यही मुद्दा उठाया है. पार्टी नेता मनोज तिवारी कहते हैं, ₹सरकार कभी जेल से नहीं चलती. जेल से गैंग चला सकते हो, सरकार नहीं. सरकार तो भारत के संविधान के तहत, एक नियम के तहत चलती है.

नई दिल्ली से बीजेपी उम्मीदवार बांसुरी स्वराज कहती है, ₹जेल से सरकार चलाने में दिल्ली की जनता का अहित हो रहा है. केजरीवाल जी तो देश के सभी नेताओं को नसीहत देते थे, आपकी आत्मा क्यों सो रही है. आपको नैतिकता पर इस्तीफ़ा दे देना चाहिए.₹

क्या केजरीवाल को जेल से सरकार चलाने की सुविधाएं मिल सकती हैं?

इसके जवाब में उन्होंने कहा कि पहले भी संजय चंद्रा और अजय चंद्रा के मामले के साथ-साथ सुब्रतो रॉय के मामले में भी उन्हें बैठकें करने, वीडियो कॉन्फ्रेंस और अन्य सुविधाएं प्रदान की गईं हैं.

उनका कहना है कि मनीष सिसोदिया को दिल्ली कोर्ट ने भी अपने क्षेत्र के लिए विधायक निधि जारी करने की इजाज़त दी थी.

अरविंद केजरीवाल की क़ानूनी स्थिति के बारे में गोपाल का कहना है कि केजरीवाल की रिमांड और ग़िरफ़्तारी को क़ानूनी चुनौती के मामले लंबित हैं, ऐसे में अरविंद केजरीवाल को जेल से सरकार चलाने में कोई कानूनी बाधा नहीं है.

जेल में रहते हुए केजरीवाल द्वारा जारी निर्देशों के बारे में उनका कहना है कि केजरीवाल को ऐसा करने का अधिकार है.

वो आगे कहते हैं कि यह स्थिति तब बदल सकती है जब उनके पास एक ऐसा महत्वपूर्ण मंत्रालय हो जिसका कामकाज वो जेल में रहते हुए नहीं कर सकते.

उपराज्यपाल क्या कर सकते हैं?

दिल्ली के उप-राज्यपाल विनय कुमार सक्सेना ने टाइम्स नाउ समिट में कहा है कि जेल से दिल्ली की सरकार नहीं चलने दी जाएगी.

टाइम्स नाउ की समिट में भी उप-राज्यपाल से यही सवाल पूछा गया कि सरकार क्या जेल से चलाई जाएगी.

इस पर उप-राज्यपाल विनय सक्सेना ने कहा, ₹मैं दिल्ली की जनता को आश्वस्त कर सकता हूं कि सरकार जेल से नहीं चलेगी.

हालांकि इस बारे में गोपाल कहते हैं कि, ₹इस मामले में उपराज्यपाल के पास भी बहुत सीमित शक्तियां हैं.

ऐसी परिस्थितियों में उपराज्यपाल के पास एकमात्र शक्ति भारत के संविधान के अनुच्छेद 239 एबी के तहत मिली है. लेकिन इस धारा के तहत मिली शक्ति का इस्तेमाल तभी किया जा सकता है जब कोई संवैधानिक संकट पैदा हो गया हो.

'सिसोदिया और जैन की तरह केजरीवाल के इस्तीफे के भी पड़ सकते हैं और दुष्परिणाम'

प्रमुख कानूनी विशेषज्ञ प्रोफेसर जी मोहन गोपाल कहते हैं, ये तर्क बहुत ख़तरनाक है कि किसी को हिरासत में लेने मात्र से ही उसे पद से हटा देना चाहिए.

उनका कहना है कि ऐसे कई उदाहरण हैं जब निवर्तमान मंत्री ग़िरफ़्तार होने के बाद भी पद पर बने रहते हैं और ऐसे भी उदाहरण हैं जब उन्होंने नैतिक आधार पर इस्तीफ़ा दे दिया है.

"किसी मामले में आरोप साबित हो जाना एक अलग बात है लेकिन लेकिन इस तरह किसी पर आरोप लगाने मात्र से ही सरकार के रोजमर्रा के कामकाज पर विपरीत असर नहीं पड़ना चाहिए.

उनका कहना है कि केजरीवाल जेल से बिलकुल सरकार चला सकते हैं, हलांकि इस संबंध में कुछ शर्तें लगाई जा सकती हैं ताकि कोर्ट में चल रहे केस को कोई नुकसान न हो.

आम आदमी पार्टी के दो मंत्रियों के इस्तीफ़े के बारे में उनका कहना है, ₹मनीष सिसौदिया और सत्येन्द्र जैन का इस्तीफ़ा उनका अपना फैसला था ताकि सरकार बिना किसी रुकावट के चल सके, लेकिन मुख्यमंत्री सरकार का मुखिया होता है. इस वजह से शायद पार्टी ने ऐसा निर्णय लिया और इसके प्रभाव अलग हो सकते हैं.₹

नई आबकारी नीति मामले में अब तक क्या हुआ?

दिल्ली में कथित शराब घोटाले में अरविंद केजरीवाल, दिल्ली के पूर्व उपमुख्यमंत्री मनीष सिसौदिया और आम आदमी पार्टी के सांसद संजय सिंह को ग़िरफ़्तार कर लिया गया है.

दिल्ली की उत्पाद शुल्क नीति में कथित अनियमितताओं की जांच के दौरान सीबीआई ने 26 फरवरी 2023 को मनीष सिसोदिया को ग़िरफ़्तार कर लिया था.

मनीष सिसौदिया के नेतृत्व में नवंबर 2021 में दिल्ली में नई एक्साइज पॉलिसी लाई गई थी.

हालाँकि, अगस्त 2022 में दिल्ली सरकार ने इस नई शराब नीति को रद्द कर दिया.

आरोप हैं कि इस नीति को लागू करने में बड़ा घोटाला हुआ है.

इस नई नीति के तहत दिल्ली सरकार की राज्य में शराब के कारोबार में हिस्सेदारी ख़त्म करनी थी और शराब का कारोबार निजी कंपनियों के हाथों में आना था.

जब नई नीति पेश की गई थी, तो सरकार ने दावा किया था कि इसका उद्देश्य राजस्व बढ़ाना, शराब की कालाबाजारी पर अंकुश लगाना, बिक्री लाइसेंस प्रक्रिया को सरल बनाना और शराब खरीदने के अनुभव में सुधार करना है.

इस नई नीति के तहत शराब की होम डिलीवरी जैसे नए उपाय भी शामिल किए गए. इतना ही नहीं, शराब विक्रेताओं को शराब की कीमत पर छूट देने की भी इजाज़त दी गई.

जुलाई 2022 में, दिल्ली के तत्कालीन मुख्य सचिव नरेश कुमार ने उपराज्यपाल को भेजी एक रिपोर्ट में दावा किया कि इस शराब नीति में कई अनियमितताएं हैं और आरोप लगाया कि मनीष सिसोदिया ने विक्रेताओं को लाइसेंस देने के बदले रिश्वत ली थी.

इस रिपोर्ट के आधार पर उपराज्यपाल ने मामले की जांच सीबीआई से कराने का अनुरोध किया और दिल्ली सरकार को नई शराब नीति वापस लेनी पड़ी.

सीबीआई ने अगस्त 2022 में मनीष सिसौदिया समेत 15 लोगों के खिलाफ मामला दर्ज किया था. इस मामले में प्रवर्तन निदेशालय अलग से जांच कर रहा है. इस जांच के दौरान ईडी ने कई लोगों को गिरफ्तार भी किया है।

मोटो जीपी बाइक रेसिंग के आयोजन में अनियमितता की जांच शुरू, यीडा सीईओ ने मांगे साक्ष्य....

परिवहन विशेष न्यूज

मोटो जीपी बाइक रेसिंग के आयोजन के लिए उत्तर प्रदेश सरकार ने 18 करोड़ रुपये दिए थे। जेवर विधायक धीरेंद्र सिंह ने फेयर स्ट्रीट स्पोर्ट्स को दी गई धनराशि का ऑडिट और अनुबंध की शर्त के पालन की जांच कराने की मांग की थी। उन्होंने कहा था कि आयोजकों द्वारा बरती गई अनियमितता को देखते हुए जांच कराना जरूरी है।

ग्रेटर नोएडा। मोटो जीपी के आयोजन में अनियमितता के आरोपों की जांच शुरू हो गई है। जांच अधिकारी यमुना प्राधिकरण सीईओ डॉ. अरुणवीर सिंह ने मोटो जीपी के आयोजन में काम करने वाली कंपनियों को नोटिस जारी कर अपना पक्ष रखने के लिए कहा है। इसके साथ ही आयोजनकर्ता कंपनी फेयर स्ट्रीट स्पोर्ट्स को भी नोटिस जारी किया गया है। जांच रिपोर्ट इन्वेस्ट यूपी को भेजी जाएगी।

मोटो जीपी बाइक रेसिंग का सितंबर 2023 से बुद्ध इंटरनेशनल सर्किट पर आयोजन किया गया था। इस आयोजन के लिए प्रदेश सरकार ने 18 करोड़ रुपये दिए थे। जेवर विधायक धीरेंद्र सिंह ने दिसंबर 2023 मुख्य सचिव डीएस मिश्रा को पत्र लिखकर फेयर स्ट्रीट स्पोर्ट्स को दी गई धनराशि का आडिट और अनुबंध की शर्त के पालन की जांच कराने की मांग की थी।

विधायक ने कहा कि आयोजकों द्वारा बरती गई अनियमितता को देखते हुए जांच कराना जरूरी है। आयोजनकर्ता कंपनी ने स्पेन की डोरना कंपनी को लाइसेंस शुल्क का 120 करोड़ रुपये भुगतान नहीं किया। उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से यह राशि दिलाने की बात कहकर गुमराह किया जा रहा है। बाइक रेसिंग के लिए ट्रैक तैयार करने वाली कंपनी सालिटियर इंजीनियरिंग का छह करोड़, जेपी समूह का 14करोड़, हाउस कीपिंग और सुरक्षा उपलब्ध कराने वाली कंपनी का पांच करोड़, समेत अन्य कंपनियों का भुगतान बकाया है।

सरकारी पैसे को आयोजनकर्ता कंपनी द्वारा हड़पने की आशंका को देखते हुए आडिट होना जरूरी है। विधायक के पत्र पर इन्वेस्ट यूपी के एसीईओ प्रथमेश कुमार ने यमुना प्राधिकरण को जमीनी जांच करने का आग्रह किया था। सीईओ यमुना प्राधिकरण डा. अरुणवीर सिंह ने बताया कि सभी संबंधित पक्षों को नोटिस जारी किया गया है। उन्हें दस्तावेज के साथ अपनी बात रखने को कहा गया है। जांच पूरी कर शासन को रिपोर्ट भेज दी जाएगी।

गोकशी करने वाले दो आरोपित मुठभेड़ में गिरफ्तार, एक के पैर में लगी गोली

परिवहन विशेष न्यूज

पकड़े गए आरोपित की पहचान मदीना गॉर्डन लोनी के दीन मोहम्मद उर्फ दिला और फुरकान हैं । दिला के दाहिने पैर में गोली लगी है। दोनों 22 मार्च को मांस से भरे मालवाहक वाहन को छोड़ कर भाग गए थे। उनके पास से एक चोरी की बाइक तमंचा और उपकरण बरामद हुए हैं। पुलिस दोनों से पूछताछ कर रही है।

साहिबाबाद। लोनी बॉर्डर और स्वाट टीम ग्रामीण जोन ने मध्यरात्रि मुठभेड़ के बाद दो गोकशी करने वाले आरोपितों को गिरफ्तार किया है। उनके पास से एक चोरी की बाइक, तमंचा और उपकरण बरामद हुए हैं। सहायक पुलिस आयुक्त अंकुर विहार भास्कर वर्मा ने बताया कि पकड़े गए आरोपित की पहचान मदीना गॉर्डन लोनी के दीन मोहम्मद उर्फ दिला और फुरकान हैं । दिला के दाहिने पैर में गोली लगी है। दोनों 22 मार्च को मांस से भरे मालवाहक वाहन को छोड़ कर भाग गए थे।

रात में दिल्ली भागने के प्रयास में थे दोनों

मुखबिर से सूचना मिली थी कि दोनों रात में दिल्ली भागने के प्रयास में हैं। सूचना पर थाना लोनी बॉर्डर पुलिस, स्वाट टीम ग्रामीण जोन पुलिस द्वारा थाना क्षेत्र में चेकिंग की गई।

चौकी लाल बाग क्षेत्र में पुलिस ने चेकिंग के दौरान बाइक सवार को रुकने का इशारा किया तो बाइक मोड़कर भागने के दौरान फिसलकर गिर गए। पकड़े जाने के डर से पुलिस पर फायरिंग कर दी। जवाबी कार्रवाई में दिला के पैर में गोली लगी। पुलिस दोनों से पूछताछ कर रही है।

बाप-बेटे में बुधवार देर रात करीब 10 बजे विवाद उस समय शुरु हुआ, जब दोनों शराब के नशे में थे और पिता ने बेटे को किसी बात पर गाली दे दी।

गलती हो गई,' पिता की हत्या करने के बाद बोला बेटा, कहा- अब मारपीट नहीं करूंगा

परिवहन विशेष न्यूज

गाजियाबाद के हरबंस नगर में बेटे ने अपने पिता को फावड़े से मारकर हत्या कर दी। हत्या करने के बाद आरोपित करीब 10 घंटे शव के साथ रहा। इसके बाद बृहस्पतिवार सुबह करीब आठ बजे आरोपित ने खुद ही पड़ोसियों को बताया कि पिता के चोट लग गई है उन्हें अस्पताल लेकर जाना है। वहीं पुलिस के सामने कहा कि गलती हो गई...

गाजियाबाद। नंदग्राम थाना क्षेत्र के हरबंस नगर में बेटे ने शराब के नशे में फावड़े से वार कर बाप की हत्या कर दी। बाप-बेटे में बुधवार देर रात करीब 10 बजे विवाद उस समय शुरु हुआ, जब दोनों शराब के नशे में थे और पिता ने बेटे को किसी बात पर गाली दे दी।

गुस्साए बेटे ने अपने बाप पर फावड़े से वार कर हत्या कर दी। करीब 10 घंटे शव के साथ रहने के बाद बृहस्पतिवार सुबह करीब आठ बजे आरोपित ने खुद ही पड़ोसियों को बताया कि पिता के चोट लग गई है, उन्हें अस्पताल लेकर जाना है। जिला अस्पताल में चिकित्सकों ने आरोपित के पिता को मृत घोषित कर दिया।

मजदूरी करते थे बाप-बेटे

मूलरूप से मध्य प्रदेश के छतरपुर निवासी 50 वर्षीय अरविंद मेरठ रोड पर हरबंस नगर में यामाहा शोरूम के पास वाली गली में अपने बेटे गोलू के साथ रहते थे। चार वर्ष पूर्व अरविंद की पत्नी का निधन हो गया था। दोनों बाप-बेटे मजदूरी कर गुजारा करते थे। पड़ोसियों ने बताया कि अरविंद अक्सर अपनी पत्नी और पिता के साथ मारपीट करता था।

इससे परेशान होकर उसकी पत्नी कुछ दिन पूर्व उसे छोड़कर चली गई थी। घर में बाप-बेटे दोनों ही रह रहे थे। बुधवार देर रात दोनों में शराब पीकर झगड़ा हुआ। गोलू का कहना है कि उसने पिता को धक्का दिया, जिससे उनका सिर फर्श में लगा और वह घायल हो गए।

रातभर वह पिता के पास रहा सुबह पड़ोस में रहने वाली महिला को बताया कि पिता के चोट लग गई है, इसलिए अस्पताल लेकर जाना है। जिला अस्पताल में अरविंद को चिकित्सकों ने मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने इसके बाद आरोपित को हिरासत में ले लिया।

गलती हो गई- आरोपित

पुलिस हिरासत में आरोपित गोलू ने पुलिस को बताया कि उसने पिता को सिर्फ मारपीट में धक्का दिया था। गलती हो गई, अब वह पिता के साथ मारपीट नहीं करेगा। पुलिस ने जब उसे बताया कि उसके पिता की मौत हो गई है, तब भी उसे यकीन नहीं हुआ।

एक हफ्ते पहले भी पिता को पीटा

पड़ोसियों ने बताया कि एक सप्ताह पहले भी बाप-बेटे में झगड़ा हुआ था। आरोपित बेटे ने अपने पिता के मुंह पर जोर से घूंसा मारा, जिससे उनकी आंख के पास चोट आई थी।

आरोपित बेटे को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। हत्या की वजह पिता द्वारा बेटे को गाली देने से शुरू हुआ विवाद है। फावड़े से मारकर हत्या हुई या फर्श में सिर लगने से आई चोट मौत की वजह बनी, इसका पता पोस्टमार्टम रिपोर्ट से लगेगा। -रवि कुमार सिंह, एसीपी नंदग्राम

साइबर ठगी के जाल में फंस गए रिटायर्ड एडिशनल डीजीपी, जालसाजों ने हड़पे 30 लाख रुपये

साइबर ठगों ने एक रिटायर्ड एडिशनल डीजीपी को भी अपने जाल में फंसा लिया। गौर सौंदर्यम सोसायटी में रहने वाले रिटायर्ड एडिशनल डीजीपी शैलेंद्र कुमार ने केस दर्ज कराया है कि फेसबुक के माध्यम से वाइकिंग ग्लोबल इन्वेस्टर्स नाम की एक कंपनी के बारे में पता चला था। ट्रेडिंग के लिए निवेश का लालच दिया गिया। झांसे में आकर उन्होंने 30 लाख 62 हजार 980 रुपये का निवेश किया।

नोएडा। सेक्टर-36 साइबर क्राइम थाने में गौर सौंदर्यम सोसायटी में रहने वाले रिटायर्ड एडिशनल डीजीपी शैलेंद्र कुमार ने केस दर्ज कराया है कि फेसबुक के माध्यम से वाइकिंग ग्लोबल इन्वेस्टर्स नाम की एक कंपनी के बारे में पता चला था। उन्हें एक संस्थागत ट्रेडिंग खाता खोलने के निर्देश के लिए एक वाट्सएप ग्रुप में शामिल होने के लिए प्रेरित किया गया।

निवेश का दिया लालच

फिर वाट्सएप ग्रुप के माध्यम से पर्सनल ट्रेडिंग खाता खोलने के लिए कहा गया। इसके बाद एनएसई और बीएसई में आगे की ट्रेडिंग के लिए निवेश का लालच दिया गिया। झांसे में आकर उन्होंने 30 लाख 62 हजार 980 रुपये का निवेश किया। कुछ समय बाद जब फंड की निकासी के अनुरोध किया तो ठगों ने इनकार कर दिया। ठग और अधिक निवेश कराने चाहते थे। इनकार करने पर ठगों ने ट्रेडिंग खाता फ्रीज कर दिया और इसे चालू करने के लिए अधिक फंड की मांग की। संदेह होने पर कार्यालय का पता पूछा तो वह पता फर्जी निकला। अब आरोपित नहीं उठा रहे हैं।

कमाई का लालच देकर 16 लाख ठगे

सेक्टर-126 कोतवाली में सुल्तानपुर गांव के सौरव त्यागी रिपोर्ट दर्ज कराई है कि इंटरनेट मीडिया के माध्यम से कुछ लोगों ने उनसे संपर्क किया। उनसे कहा कि वीडियो लाइक करने पर उन्हें प्रति लाइक 50 रुपये मिलेंगे। आरोपितों ने अपने जाल में फंसाया और धीरे-धीरे कर उन्हें टेलीग्राम एप से जोड़ा। आरोपितों ने शुरुआती दौर में उन्हें कुछ फायदा पहुंचाया और धीरे-धीरे ज्यादा फायदा देने का लालच देकर उनसे करीब 16 लाख 24 हजार 250 रुपये अपने खाते में डलवा लिए। बाद में पीड़ित से और रकम की मांग करने लगे। जब पीड़ित को अपनी ठगी का एहसास हुआ तो उसने उन्हें पैसे देने से इनकार कर दिया। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

बिना पूर्व सूचना बिजली कटौती होने से लोग परेशान, 6 से 8 घंटे तक नहीं हो रही इलेक्ट्रिसिटी की आपूर्ति

गर्मी आते ही नोएडा में बिजली आपूर्ति पूरी तरह गड़बड़ा जाती है। मांग के अनुरूप आपूर्ति होने के बावजूद जर्जर ढांचे के चलते ट्रिपिंग और कटौती की समस्या आम हो जाती है। इसके बावजूद विद्युत निगम समय से पूर्व तैयार करने में नाकाम है। जब बिजली की मांग बढ़ने लगी है। तब विद्युत निगम पैनल बाक्स जर्जर तार ट्रांसफार्मर पर काम कर रहे हैं।

नोएडा। गर्मी आते ही विद्युत निगम को मरम्मत की याद आ गई है। बीते कुछ दिनों से विद्युत निगम की तरफ से व्यापक स्तर पर अभियान शुरू किया गया है। इसके लिए निगम की तरफ से घंटों बिजली कटौती हो रही है, लेकिन उपभोक्ताओं को इसकी पूर्व सूचना नहीं दी जा रही है। इसके चलते लोगों को खासी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। छह से आठ घंटे तक बिजली कटौती हो रही है। गर्मी आते ही नोएडा में बिजली आपूर्ति पूरी तरह गड़बड़ा जाती है। मांग के अनुरूप आपूर्ति होने के बावजूद जर्जर ढांचे के चलते ट्रिपिंग और कटौती की समस्या आम हो जाती है। इसके बावजूद विद्युत निगम समय से पूर्व तैयार करने में नाकाम है।

राजस्थान में वसुंधरा समर्थक सांसदों का सफाया

रमेश सर्राफ धमोरा

जयपुर शहर लोकसभा सीट से भाजपा से दो बार लगातार सांसद व पूर्व जिला प्रमुख रहे रामचरण बोहरा का टिकट काटकर मंजू शर्मा को प्रत्याशी बनाया गया हैं। रामचरण बोहरा वसुंधरा राजे के नजदीकी लोगों में शुमार होते थे तथा उनके हर कार्यक्रम में पूरी सक्रियता से भाग लेते थे।

राजस्थान में भारतीय जनता पार्टी ने वरिष्ठ नेता व पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे सिंधिया के सभी समर्थक सांसदों के टिकट काट दिए हैं। पिछले विधानसभा चुनाव में वसुंधरा राजे समर्थक विधायकों के बड़ी संख्या में टिकट काटे गए थे। अब लोकसभा चुनाव में भी उनके समर्थकों का सफाया हो गया है। सिर्फ वसुंधरा राजे के पुत्र दुष्यंत सिंह को झालावाड़ से पांचवीं बार सांसद का टिकट मिला है।

श्रीगंगानगर सीट पर पांच बार के मौजूदा सांसद निहालचंद मेघवाल का टिकट काटकर अनूपगढ़ नगर परिषद की अध्यक्ष प्रियंका बैलान को प्रत्याशी बनाया गया है। प्रियंका बैलान प्रदेश भाजपा के अध्यक्ष सीपी जोशी के साथ युवा मोर्चा में प्रदेश सचिव रह चुकी है। निहालचंद मेघवाल 1996, 1999, 2004, 2014 व 2019 में सांसद व 1998 में रायसिंह नगर से विधायक रह चुके हैं। उनके पिता बेगाराम चौहान 1977 में जनता पार्टी से व 1989 में जनता दल से सांसद व 1972 में रायसिंह नगर से स्वतंत्र पार्टी की टिकट पर विधायक रह चुके हैं। निहालचंद के भाई लालचंद चौहान भी 2003 में रायसिंह नगर से भाजपा के विधायक रह चुके हैं। ऐसे में निहालचंद मेघवाल का टिकट काटने का सिर्फ एक ही कारण रहा है। उनका वसुंधरा राजे गुट में होना। कांग्रेस ने वहां से कुलदीप इंदौरा को प्रत्याशी बनाया है।

चूरू से भाजपा के दो बार सांसद रहे राहुल कस्वां का टिकट काटने का भी मुख्य कारण वसुंधरा राजे के नजदीकी होना था। राहुल कस्वां चूरू में मजबूत जनाधार वाले नेता माने जाते हैं। पिछले विधानसभा चुनाव में नेता प्रतिपक्ष रहे राजेंद्र राठौड़ के तारानगर से चुनाव हारने के चलते राहुल कस्वां का टिकट काटा गया है। राहुल कस्वां स्वयं 2014 व 2019 में चूरू से भाजपा टिकट पर चुनाव जीत चुके हैं। उनके पिता रामसिंह कस्वां चूरू से चार बार सांसद व सादुलपुर से विधायक रह चुके हैं।

राहुल कस्वां के दादा दीपचंद कस्वां 1980 में सादुलपूर सीट से निर्दलिय व राहुल कस्वां की माता कमला कस्वां 2008 में सादुलपुर से भाजपा की विधायक रह चुकी है। उनकी माता कमला कस्वां चूरू की जिला प्रमुख व पंचायत समिति प्रधान भी रही हैं। राहुल कस्वां उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ के छोटे भाई कुलदीप धनकड़ के दामाद है। फिर भी उनका टिकट महज राजेंद्र राठौड़ के विरोध के चलते काटा गया है। अब राहुल कस्वां कांग्रेस टिकट पर चूरू लोकसभा सीट पर चुनाव लड़ रहे हैं।

झुंझुनू से नरेंद्र कुमार खीचड़ का टिकट काटकर उदयपुरवाटी से पूर्व में विधायक रहे शुभकरण चौधरी को प्रत्याशी बनाया गया है। नरेंद्र खीचड़ भी वसुंधरा राजे के नजदीकी माने जाते रहे हैं। 2018 के विधानसभा चुनाव से पहले स्वयं वसुंधरा राजे ने उनको भाजपा में शामिल करवा कर 2018 के विधानसभा चुनाव में भाजपा टिकट पर प्रत्याशी बनवाया था। 2019 में उन्हें वसुंधरा राजे की सिफारिश पर ही लोकसभा चुनाव में प्रत्याशी बनाया गया था। झुंझुनू में कांग्रेस ने पूर्व केंद्रीय मंत्री शीशराम ओला के सुपुत्र विजेंद्र ओला को प्रत्याशी बनाया है।

जयपुर शहर लोकसभा सीट से भाजपा से दो बार लगातार सांसद व पूर्व जिला प्रमुख रहे रामचरण बोहरा का टिकट काटकर मंजू शर्मा को प्रत्याशी बनाया गया हैं। रामचरण बोहरा वसुंधरा राजे के नजदीकी लोगों में शुमार होते थे तथा उनके हर कार्यक्रम में पूरी सक्रियता से भाग लेते थे। इसी के चलते उनका टिकट काटा गया है। हालांकि मंजू शर्मा भी भाजपा के तीन बार प्रदेश अध्यक्ष व भाजपा की सभी सरकारों में मंत्री रहे दिग्गज नेता भंवरलाल शर्मा की पुत्री है तथा 2008 में हवामहल सीट पर कांग्रेस प्रत्याशी बृजकिशोर शर्मा से मात्र 580 वोटो से चुनाव हार गई थी। चर्चा है कि मंजू शर्मा को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की सिफारिश पर भाजपा का प्रत्याशी बनाया गया है।

दौसा से भाजपा सांसद जसकौर मीणा का टिकट काट दी गयी है। जसकौर मीणा पूर्व में सवाई माधोपुर से सांसद व बाजपेयी सरकार में राज्य मंत्री रह चुकी है। वह वसुंधरा राजे के नजदीकी मानी जाती है। दौसा सीट पर वर्तमान सांसद जसकोर मीणा अपनी पुत्री अर्चना मीणा को टिकट दिलवाना चाहती थी। वहीं राजस्थान सरकार में मंत्री किरोड़ीलाल मीणा अपने भाई जगमोहन मीणा को टिकट दिलवाना चाहते थे। ऐसे में भाजपा ने वहां से चार बार विधायक व मंत्री रह चुके कन्हैयालाल मीणा को प्रत्याशी बनाया है। कांग्रेस ने दौसा से मौजूदा विधायक मुरारीलाल मीणा को प्रत्याशी बनाया है।

करौली-धौलपुर लोकसभा सीट से भाजपा ने मौजूदा सांसद मनोज राजोरिया का टिकट काट कर पूर्व प्रधान इन्दु देवी जाटव को प्रत्याशी बनाया है। मनोज राजोरिया 2014 व 2019 में सांसद बनने में सफल रहे थे। उनका वसुंधरा राजे के प्रति जुड़ाव किसी से छिपा हुआ नहीं है। इसी के चलते उनका टिकट काटा गया है।

उदयपुर सीट अनुसूचित जनजाति के लिए आरक्षित है। यहां से लगातार दो बार सांसद रहे अर्जुनलाल मीणा का टिकट काटकर उनके स्थान पर परिवहन विभाग में कार्यरत मन्नालाल रावत को उम्मीदवार बनाया गया है। अर्जुन लाल मीणा वसुंधरा राजे गुट के माने जाते हैं। इसी के चलते उनका टिकट काट दिया गया है। कांग्रेस ने यहां से पूर्व जिला कलेक्टर ताराचंद मीणा को प्रत्याशी बनाया है। बांसवाड़ा-डूंगरपुर लोकसभा सीट पर मौजूदा सांसद कनकमल कटारा का टिकट काटकर कांग्रेस से भाजपा में आए विधायक महेंद्रजीत सिंह मालवीय को प्रत्याशी बनाया गया है। मालवीय प्रदेश अध्यक्ष सीपी जोशी व लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला की पसंद माने जाते हैं।

भीलवाड़ा लोकसभा सीट पर लगातार दो बार से सांसद बनते आ रहे सुभाष बहेड़िया का टिकट कटना भी तय माना जा रहा है क्योंकि यहां से अभी तक प्रत्याशी के नाम की घोषणा नहीं हो पाई है। जबकि कांग्रेस ने यहां से दामोदर गुर्जर को अपना प्रत्याशी बना दिया है। सुभाष बहेड़िया ने 2019 का लोकसभा चुनाव 611460 वोटो के अंतर से जीता था। इतनी बड़ी जीत होने के बावजूद भी बहेड़िया का टिकट क्लियर नहीं होने के चलते कयास लगाए जा रहे हैं कि पिछली बार अजमेर से कांग्रेस प्रत्याशी रहे रिजु झुंझुनूवाला के भाजपा में शामिल होने के चलते भीलवाड़ा से उनको भी प्रत्याशी बनाया जा सकता है।

अजमेर से भाजपा के मौजूदा सांसद व प्रत्याशी बनाये गये भागीरथ चौधरी पिछले विधानसभा चुनाव में किशनगढ़ सीट पर तीसरे स्थान पर रहे थे। मगर इसके बावजूद उनको प्रत्याशी बनाया गया है। भागीरथ चौधरी भी पहले वसुंधरा राजे के नजदीकी थे। मगर उन्होंने परिस्थितियों देखकर उनसे दूरी बना ली। इसी के चलते उनका प्रत्याशी बना दिया गया है।

राजस्थान भाजपा में अब पूरी तरह पीढ़ीगत बदलाव हो रहा हैं। एक तरफ जहां भजनलाल शर्मा जैसे आम कार्यकर्ता को वसुंधरा राजे पर तरहीज देते हुए मुख्यमंत्री बना दिया गया है। वहीं लोकसभा चुनाव में भी सभी वसुंधरा समर्थकों के टिकट काटकर नए लोगों को प्रत्याशी बनाना इस बात का संकेत है कि राजस्थान की राजनीति में अब वसुंधरा राजे का प्रभाव समाप्त हो रहा है और नई पीढ़ी के नेता आगे आ रहे हैं।

मारुति अपने नेक्सा शोरूम से बेचेगी eVX, इन खूबियों के साथ एंट्री मारेगी कंपनी की पहली इलेक्ट्रिक कार

परिवहन विशेष न्यूज

वर्तमान में अपनी प्रीमियम कारों को Nexa और नियमित वाहनों को Arena शोरूम के माध्यम से बेचती है। इस 5-सीटर EV को पहले ही भारतीय सड़कों पर कई बार परीक्षण करते हुए देखा जा चुका है और इसे भारत से जापान और यूरोप सहित विदेशी बाजारों में निर्यात किया जाएगा। आइए अपकमिंग ईवी के बारे में जान लेते हैं।

नई दिल्ली। देश की सबसे बड़ी कार निर्माता कंपनी Maruti Suzuki वर्तमान में अपनी प्रीमियम कारों को Nexa और नियमित वाहनों को Arena शोरूम के माध्यम से बेचती है। लगातार बढ़ती बिक्री संख्या के साथ, मारुति सुजुकी इस वित्त वर्ष में सबसे ज्यादा बिकने वाली UV निर्माता बन गई है।

इसके बाद, ब्रांड आने वाले वर्षों में नए हाइब्रिड, वैकल्पिक ईंधन और इलेक्ट्रिक वाहनों को पेश करके अपने लाइनअप का विस्तार करने की योजना बना रहा है। इसका पहला इलेक्ट्रिक वाहन अगले साल की शुरुआत में आएगा और इसे भी नेक्सा शोरूम से बेचा जाएगा। आइए, इसके बारे में जान लेते हैं।

डिजाइन, डायमेंशन और स्पेसिफिकेशन

इस 5-सीटर EV को पहले ही भारतीय सड़कों पर कई बार परीक्षण करते हुए देखा जा चुका है और इसे भारत से जापान और यूरोप सहित विदेशी बाजारों में निर्यात किया जाएगा। इसे टोयोटा के 27PL प्लेटफॉर्म पर आधारित किया जाएगा, जो 40PL से लिया गया है और 60 kWh बैटरी पैक से लैस होगा, जो एक बार चार्ज करने पर लगभग 550 किमी की ड्राइविंग रेंज देने में सक्षम होगा।

इंटीरियर और फीचर्स

इंटीरियर एक बड़े टचस्क्रीन इंफोटेनमेंट सिस्टम, एक पूरी तरह से डिजिटल इंस्ट्रूमेंट कंसोल, हेड-अप डिस्प्ले, 360-डिग्री कैमरा सिस्टम, एयरबैग, माउंटेड कंट्रोल के साथ फ्लैट-बॉटम स्टीयरिंग व्हील जैसे फीचर्स से लैस होने वाला है। इसे एडास सुइट भी मिलेगा।

अनुमानित कीमत

2023 Auto Expo के अंदर Maruti Suzuki evX कॉन्सेप्ट के रूप में पेश की गई ये प्रोडक्शन रेडी मिडसाइज इलेक्ट्रिक एसयूवी आगामी Hyundai Creta EV, Citroen C3 Aircross based EV, जल्द ही लॉन्च होने वाली Tata Curvv और Mahindra XUV.e8 जैसी इलेक्ट्रिक कारों को टक्कर देगी। इसकी अनुमानित कीमत 15 लाख रुपये है।

इन तरीकों से घर बैठे बदलें कार के टायर, समय के साथ होगी पैसों की बचत

कार के टायर बदलने से पहले इसे सेफ जगह पर पार्क करें। यह भी सुनिश्चित करें कि कार के चारों ओर पर्याप्त जगह है। वाहन को पार्क करने के बाद हैंड ब्रेक को उसकी उच्चतम स्थिति पर लगाना सुनिश्चित करें और पार्किंग या हैजर्ड लाइट चालू करें। अगर आप खुद से टायर बदलना सीख जाएंगे तो समय के साथ पैसों की बचत होगी। गाड़ी के टायर बदलना आसान प्रोसेस है।

नईदिल्ली। अगर आपके पास कार है और आप नियमित रूप से गाड़ी चलाते हैं, तो कार का टायर बदलने का तरीका जानना बहुत जरूरी है। अगर आप खुद से टायर बदलना सीख जाएंगे, तो समय के साथ पैसों की बचत होगी। गाड़ी के टायर बदलना आसान प्रोसेस है। आइए, इसे स्टेप-बाय-स्टेप जान लेते हैं।

सेफ जगह गाड़ी पार्क करें

कार के टायर बदलने से पहले इसे सेफ जगह पर पार्क करें। यह भी सुनिश्चित करें कि कार के चारों ओर पर्याप्त जगह है। वाहन को पार्क करने के बाद, हैंड ब्रेक को उसकी उच्चतम स्थिति पर लगाना सुनिश्चित करें और पार्किंग या हैजर्ड लाइट चालू करें।

कार को जैक से उठाएं

कार को पर्याप्त ऊपर उठाने के लिए जैक का उपयोग करें, ताकि पहिये को आसानी से निकाला जा सके। जैक की मदद से कार को उसी स्थिति में ठीक करें।

नट खोलें

कार के अधिकांश टायर व्हील कवर से ढके होते हैं। टायर बदलने से पहले इन्हें हटाना जरूरी है। व्हील कवर हटाने के बाद लग नट को ढीला करें और उन्हें बाहर निकालें। अब पहिए को व्हील हब से बाहर निकालें।

टायर बदलें

क्षतिग्रस्त टायर को बदलने के लिए आपकी कार में मौजूद अतिरिक्त टायर का उपयोग करें। बस स्पेयर व्हील को व्हील हब में रखें और सुनिश्चित करें कि स्क्रू होल पर नट ठीक से प्लेस्ड हैं।

फिर से नट कस दें

लग रिंच का उपयोग करके लग नट को कसकर पेंच करें और फिर व्हील कवर को उसकी स्थिति में रखें। एक बार हो जाने के बाद, कार को सड़क पर नीचे करें और अब आपकी गाड़ी चलने के लिए तैयार है।

फरवरी 2024 में विदेशों में रही इन मेड इन इंडिया कारों की मांग, जानें टॉप-5 का हाल

भारत में Maruti Honda Hyundai Tata जैसी कई कंपनियों की ओर से वाहनों का उत्पादन किया जाता है। जिनकी बिक्री भारत के साथ ही दुनिया के कई देशों में भी होती है। फरवरी 2024 के दौरान कुल कितनी कारों और एसयूवी का एक्सपोर्ट (Car Export) किया गया है। इनमें से किन पांच कारों को सबसे ज्यादा पसंद किया गया है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। मारुति, हुंडई, होंडा, टाटा, टोयोटा जैसी कई कंपनियां भारत में अपनी कारों का निर्माण करती हैं। जिसके साथ ही कुछ Made In India कारों को कई देशों में भी भेजा जाता है। हम इस खबर में आपको बता रहे हैं कि February 2024 के दौरान कुल कितनी कारों और एसयूवी को एक्सपोर्ट किया गया है। इसके साथ ही किन पांच कारों और एसयूवी की बीते महीने विदेशों में सबसे ज्यादा मांग रही है।

कितनी Made In India कारों का हुआ Export

रिपोर्ट्स के मुताबिक February 2024 के दौरान कुल 60767 यूनिट्स कारों और एसयूवी का कई देशों में Export किया गया है। पिछले साल इसी अवधि के दौरान 67907 यूनिट्स का एक्सपोर्ट किया गया था। आंकड़ों के मुताबिक ईयर ऑन ईयर बेसिस पर एक्सपोर्ट में 10.51 फीसदी की कमी आई है।

टॉप-5 में शामिल हुईं ये कारें और SUV

एक्सपोर्ट के मामले में भारत से करीब 50 से ज्यादा कारों को दुनियाभर के कई देशों में भेजा जाता है। लेकिन इनमें से सबसे ज्यादा मांग मारुति बलेनो की रही। बीते महीने में इस हैचबैक कार की कुल 5110 यूनिट्स का एक्सपोर्ट किया गया है। जबकि पिछले साल फरवरी महीने के दौरान इस गाड़ी की 3552 यूनिट्स का एक्सपोर्ट हुआ था। इसके बाद दूसरे नंबर पर मारुति डिजायर रही, जिसकी कुल 4474 यूनिट्स का एक्सपोर्ट किया गया। तीसरे नंबर पर जिम्नी आई, जिसकी कुल 4406 यूनिट्स एक्सपोर्ट हुई। इसके बाद होंडा एलीवेट एसयूवी का नंबर रहा, इस एसयूवी की कुल 3610 यूनिट्स को विदेशों में भेजा गया। नंबर-5 पर मारुति की स्विफ्ट हैचबैक रही। स्विफ्ट की कुल 3590 यूनिट्स को दुनियाभर में एक्सपोर्ट किया गया है।

इनकी रही सबसे कम मांग

फरवरी 2024 में जिन कारों की सबसे कम मांग विदेशों में रही उनमें रेनो ट्राइबर, सिट्रॉएन ईसी3, महिंद्रा बोलेरो, रेनो काइगर और मारुति इग्निस हैं। रेनो ट्राइबर और सिट्रॉएन ईसी3 की सिर्फ एक एक यूनिट्स को फरवरी में एक्सपोर्ट किया गया। महिंद्रा की बोलेरो की पांच, रेनो काइगर और मारुति इग्निस की नौ नौ यूनिट्स को भी बीते महीने में एक्सपोर्ट किया गया है।

200 सीसी की इन दोनों बाइक स में से कौन है बेहतर, जानें डिटेल

परिवहन विशेष न्यूज

भारतीय बाजार में 200 सीसी सेगमेंट में कई बाइक स को ऑफर किया जाता है। लेकिन इनमें से Bajaj Pulsar Rs 200 और Hero Xtreme 200s 4v जैसी बाइक स को सबसे ज यादा पसंद किया जाता है। बजाज और हीरो की इन दोनों बाइक स में किस तरह के फीचर्स को दिया जाता है। इनमें कितनी क्षमता का इंजन मिलता है और इनकी कीमत क या है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। 200 सीसी सेगमेंट की बाइक्स में देश में बजाज से लेकर टीवीएस तक की कई बाइक्स ऑफर की जाती हैं। लेकिन इनमें से Bajaj Pulsar RS200 और Hero Xtreme 200s 4V को काफी ज्यादा पसंद किया जाता है। हम इस खबर में आपको इन दोनों बाइक्स के फीचर्स, इंजन और कीमत की जानकारी दे रहे हैं।

कैसा है इंजन

बजाज और हीरो की ओर से 200 सीसी सेगमेंट में इन दोनों ही बाइक्स को बेहतर ताकतवर इंजन और फीचर्स के साथ ऑफर किया जाता है। बजाज की ओर से पल्सर आरएस200 बाइक को फेयर्ड बाइक के तौर पर ऑफर किया जाता है। इस बाइक में कंपनी की ओर से 199.5 सीसी का ट्रिपल स्पार्क फोर वॉल्व डीटीएस आई फ्यूल इंजेक्शन इंजन दिया जाता है। जिससे इसे 24.5 पीएस की पावर और 18.7 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलता है। बाइक में ड्यूल चैनल एबीएस और 157 एमएम की ग्राउंड क्लियरेंस दी जाती है। वहीं हीरो एक्सट्रीम 200एस 4वी बाइक में कंपनी की ओर से 199.6 सीसी का सिंगल सिलेंडर ऑयल कूल्ड इंजन दिया जाता है। जिससे बाइक को 19 बीएचपी और 17.35 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलता है।

कैसे हैं फीचर्स

बजाज की ओर से पल्सर आरएस200 बाइक में प्रोजेक्टर हेडलाइट्स, स्प्लिट सीट, डबल डिस्क ब्रेक, मोनोशॉक सस्पेंशन, डिजिटल स्पीडोमीटर जैसे फीचर्स को दिया जाता है। हीरो एक्सट्रीम 200एस 4वी बाइक में कॉम्पैक्ट स्पोर्टी एग्जॉस्ट, एलईडी लाइट्स, 7स्टेप एडजस्टेबल मोनो सस्पेंशन, डिजिटल स्पीडोमीटर, स्मार्टफोन कनेक्टिविटी, डबल डिस्क ब्रेक जैसे फीचर्स मिलते हैं।

कितनी है कीमत

Bajaj Pulsar RS200 बाइक को कंपनी की ओर से रेड, ग्रे और वाइट कलर के विकल्प के साथ 1.72 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत पर ऑफर किया जाता है। जबकि हीरो मोटोकॉर्प की ओर से Xtreme 200s 4V को 1.41 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत पर खरीदा जा सकता है।

टोयोटा की गाड़ियों को खरीदना एक अप्रैल से हो जाएगा महंगा, जानें कितने बढ़ेंगे दाम

परिवहन विशेष न्यूज

जापानी कार निर्माता Toyota भारत में हैचबैक से लेकर एमपीवी और एसयूवी सेगमेंट की कई कारों की बिक्री करती है। लेकिन जल्द ही कंपनी की कारों और एसयूवी को खरीदना जल्द ही महंगा होने जा रहा है। कंपनी की ओर से एक अप्रैल 2024 से अपने पोर्टफोलियो में मौजूदा गाड़ियों की कीमत में कितना Price Hike होगा। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में हैचबैक, एमपीवी और एसयूवी सेगमेंट में कई बेहतरीन कारों को ऑफर करने वाली कंपनी Toyota ने घोषणा की है कि वह जल्द ही अपने पोर्टफोलियो में मौजूद वाहनों की कीमत बढ़ाएगी। कंपनी की ओर से एक अप्रैल से वाहनों की कीमतों में कितनी बढ़ोतरी (Price Hike) की जाएगी। कीमत में बढ़ोतरी किस कारणों से हो रही है। हम इसकी जानकारी आपको इस खबर में दे रहे हैं।

Toyota करेगी Price Hike

जापान की वाहन निर्माता टोयोटा की ओर से भारतीय बाजार में एक अप्रैल 2024 से अपने पोर्टफोलियो में मौजूद कार, एमपीवी और एसयूवी की कीमत में बढ़ोतरी की जाएगी। टोयोटा ने कीमतों में बढ़ोतरी की जानकारी देने के साथ यह भी बताया है कि ऐसा इनपुट कॉस्ट में बढ़ोतरी और ऑपरेशनल खर्चों के कारण किया जा रहा है।

कितनी होगी बढ़ोतरी

कंपनी की ओर से दी गई जानकारी के मुताबिक नए वित्तीय वर्ष के शुरू होने पर कंपनी अधिकतम एक फीसदी तक की बढ़ोतरी कर देगी। लेकिन यह जानकारी नहीं दी है कि किस गाड़ी के किस वेरिएंट की कीमत को कितना बढ़ाया जाएगा।

पोर्टफोलियो में कितनी कारें

टोयोटा की ओर से भारतीय बाजार में 11 वाहनों को ऑफर करती है। कंपनी हैचबैक के तौर पर Glanza को ऑफर किया जाता है। लग्जरी सेडान के तौर पर कैमरी को पेश किया जाता है। जबकि एमपीवी सेगमेंट में कंपनी सबसे ज्यादा विकल्प ऑफर करती है। इस सेगमेंट की शुरूआत रूमीऑन से होती है और इसके बाद Innova Crysta, Innova Hycross को ऑफर किया जाता है। लग्जरी एमपीवी सेगमेंट में कंपनी Vellfire को ऑफर करती है। हैचबैक, सेडान और एमपीवी के अलावा कंपनी एसयूवी सेगमेंट में अर्बन क्रूजर हाइराइडर, फॉर्च्यूनर, Legender, लैंड क्रूजर 300 को बिक्री के लिए उपलब्ध करवाती है।

कर करनी, कर जोड़ कर

पीके खुराना

ईशा फाउंडेशन के मुखिया सद्गुरु के नाम से प्रसिद्ध श्री जग्गी वासुदेव इन दिनों दिल्ली के अपोलो अस्पताल में स्वास्थ्य लाभ कर रहे हैं। अपोलो अस्पताल द्वारा बीस मार्च को जारी किए गए प्रेस नोट के मुताबिक वे पिछले एक माह से तीव्र सिर दर्द से पीड़ित रहे हैं।

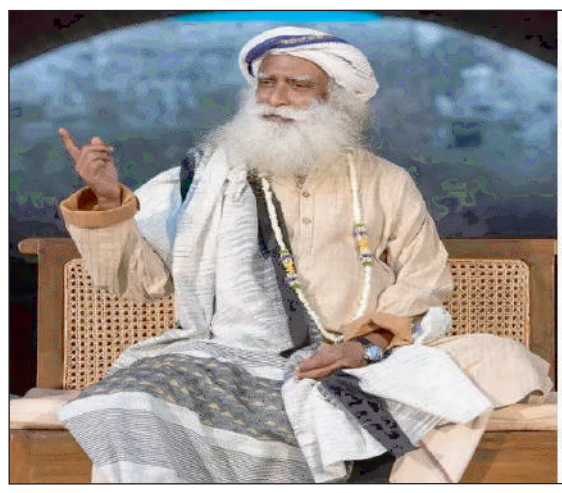

भजन-कीर्तन करते हों तो करें। माला जपते हों तो जपें। उसमें कुछ भी बदलने की आवश्यकता नहीं है। समझना सिर्फ ये है कि ये सब अध्यात्म की शुरुआती सीढियां हैं। अध्यात्म में आगे तब बढ़ेंगे जब हम खुद भगवान हो जाएंगे, तो हमारा हर काम खुद-ब-खुद परमात्मा को समर्पित होता चला जाएगा। जीवन सिर्फ स्वस्थ ही नहीं होगा, खुशनुमा भी होगा और खुशहाल भी होगा। स्पिरिचुअल हीलिंग, यानी आध्यात्मिक उपचार इस मामले में हमारे लिए सबसे उपयुक्त साधन है, जो हमें हमारी मानसिकता बदलने, मन के अशुद्ध विचारों को बदलने की शक्ति देता है'

ईशा फाउंडेशन के मुखिया सद्गुरु के नाम से प्रसिद्ध श्री जग्गी वासुदेव इन दिनों दिल्ली के अपोलो अस्पताल में स्वास्थ्य लाभ कर रहे हैं। अपोलो अस्पताल द्वारा बीस मार्च को जारी किए गए प्रेस नोट के मुताबिक वे पिछले एक माह से तीव्र सिर दर्द से पीड़ित रहे हैं। पंद्रह मार्च को यह सिर दर्द जब हद से बढ़ गया तो सद्गुरु ने अपोलो अस्पताल के डॉक्टर विनीत सूरी से संपर्क किया। एमआरआई के बाद पता चला कि उनके मस्तिष्क में रक्तस्राव हो रहा है। उन्हें तुरंत अस्पताल में दाखिल होने की सलाह दी गई, लेकिन कुछ महत्वपूर्ण गतिविधियों में उनकी शिरकत के चलते ऐसा संभव न हो सका। स्थिति ऐसी थी कि उनके जीवन को भी खतरा था, इसलिए अंततः 17 मार्च को वे अस्पताल में दाखिल कर लिए गए और उनका आपरेशन हुआ। बीस मार्च के इस प्रेस नोट के मुताबिक आपरेशन के बाद उनकी हालत में सुधार हो रहा है, लेकिन जो महत्वपूर्ण बात इस प्रेस नोट में कही गई है, वह यह है कि दवाइयों और डॉक्टरों की देखभाल के अतिरिक्त सद्गुरु अपनी इच्छाशक्ति से खुद भी अपना इलाज कर रहे हैं। हमारा यह शरीर एक अद्भुत अस्पताल है जो अपना इलाज खुद ही कर पाने में समर्थ है, बशर्ते कि हम इसे अपना इलाज करने की इजाजत दें।

'ओन योर बॉडी' (अपने शरीर के मालिक खुद बनिए) पुस्तक के लेखक और इंस्टीट्यूट ऑव लिवर एंड बेलियारी सांइसिज के फाउंडिंग डायरेक्टर डा. शिव कुमार सरीन स्पष्ट रूप से कहते हैं कि किसी भी बीमारी की स्थिति में दवाई तभी लेनी चाहिए जब और कोई चारा न हो, क्योंकि हमारे शरीर में वो सब गुण और साधन मौजूद हैं जो शरीर को खुद ही ठीक कर सकते हैं। आवश्यकता सिर्फ इस बात की है कि हम धीरज रखें और प्राकृतिक जीवन जिएं। हम इतने सुविधाभोगी और नाजुक हो गए हैं कि जरा सी तकलीफ पर पेन किलर लेना, एंटी-बॉयोटिक्स लेना हमारी आदत में शुमार हो गया है, जबकि यह हमारी सेहत के लिए अच्छा नहीं है। कोई भी दर्द या आम बुखार एक संदेशवाहक मात्र है जो हमें बताता है कि हमारे शरीर में कहीं कोई गड़बड़ है और इस गड़बड़ को ठीक किया जाना चाहिए, लेकिन गड़बड़ को ठीक करने के बजाय हम संदेशवाहक के इलाज में जुट जाते हैं। हम सब चाहते हैं कि हम स्वस्थ और खुशहाल जीवन जिएं। इस संबंध में चिकित्सा विज्ञान कहता है कि हमें स्वास्थ्यकर भोजन लेना चाहिए और नियमित व्यायाम करना चाहिए। मनोविज्ञान कहता है कि स्वस्थ रहने के लिए खुश रहना जरूरी है और खुश रहने के लिए हमारे मजबूत रिश्ते होने चाहिएं, हमें दोस्तों के साथ रहना चाहिए और हमारे कुछ अच्छे शौक होने चाहिएं। अध्यात्म कहता है कि रिश्ते मजबूत तभी होंगे अगर हमारे विचार धनात्मक हों। धनात्मक विचारों के लिए हमें हमेशा परमात्मा का शुक्रगुजार होना चाहिए। अध्यात्म हमें हमेशा 'ऐटीट्यूड ऑव ग्रैटीट्यूड', यानी हमेशा शुक्रगुजार होने की सीख देता है। निष्काम कर्म का नजरिया शुक्रगुजार रहने का सबसे बढिया तरीका है। गीता में भगवान श्री कृष्ण ने निष्काम कर्म की महत्ता पर जोर देते हुए कहा है कि हम साक्षी भाव से अपना फर्ज निभाते चलें। कत्र्तव्य निष्पादन की राह में अगर युद्ध आवश्यक है तो वह भी यह मान कर करें कि हम परमात्मा के हाथों के औजार हैं। 'तेरा तुझको सौंपते, क्या लागत है मोर' की भावना से किया गया हर कार्य परमात्मा की स्तुति बन जाता है।

'सहज संन्यास' में रहते हुए मैंने यह सीखा है कि हम अगर निष्काम कर्म की सही व्याख्या को समझ लें तो हमारा हर काम परमात्मा की भक्ति हो सकता है। निष्काम कर्म की साधना बहुत आसान है। मैं जब वस्त्र पहनूं तो ये समझूं कि परमात्मा को वस्त्र पहना रहा हूं, तो मैं खुद अपने शरीर की सफाई रखूंगा और साफ-सुथरे कपड़े पहनूंगा। भोजन करते वक्त अगर मैं यह समझूं कि यह भोजन परमात्मा को प्रसाद के रूप में चढ़ाया जा रहा है तो मैं पेड़-पौधों से मिलने वाला भोजन ही लूंगा, ताजा भोजन ही लूंगा और भोजन को इस हद तक चबाऊंगा कि वह तरल बन जाए, पानी सरीखा बन जाए, उसमें मेरी लार मिल जाए, भोजन की प्रकृति क्षारीय हो जाए और भोजन ही शरीर के लिए दवा का काम करे। सहज संन्यास की धारणा है कि हमारा शरीर ही मंदिर है, हमारा कत्र्तव्य ही पूजा है और चढ़ावा चढ़ाने के लिए किसी पूजा स्थल पर जाने की आवश्यकता नहीं है। मैं जो कुछ करूं, वह परमात्मा को अर्पण करके करूं। 'कर करनी, कर जोड़ कर' को इसी भाव में समझना चाहिए। कर करनी, यानी जो भी करें, कर जोड़ कर करें, हाथ जोड़ कर करें, परमात्मा को नमस्कार करके करें। संत रविदास जी ने क्या खूब ही कहा है कि 'मन चंगा, तो कठौती में गंगा', मन शुद्ध हो आपके बर्तन में पड़ा पानी भी साधारण नहीं रह जाता, वह गंगाजल जितना निर्मल और पवित्र हो जाता है। दिन भर काम करते हुए हम इधर-उधर जाते हैं, वही परमात्मा की परिक्रमा है, मेरा हर काम परमात्मा की पूजा है। मैं ही परमात्मा हूं, और इस जगत का हर जीव-जंतु परमात्मा का ही अंश है। अब जब हर कोई परमात्मा का अंश है और मेरा हर काम परमात्मा की पूजा है तो मैं झूठ कैसे बोल सकता हूं, किसी को धोखा कैसे दे सकता हूं, फरेब कैसे कर सकता हूं? यही निष्काम कर्म है, यही सहज संन्यास है। वस्तुतः निष्काम कर्म ही सहज संन्यास है।

सहज संन्यास की खासियत ही यही है कि इसके लिए हमें अपना धर्म बदलने की आवश्यकता नहीं है। हम किसी भी धर्म, संप्रदाय, मत को मानते हों, हमारे इष्ट देव कोई भी हों, उसे बदलने की जरूरत नहीं है। बदलना है सिर्फ अपना नजरिया, अपना जीवन, अपना लाइफस्टाइल। इससे ही सब बदल जाएगा। 'कर करनी, कर जोड़ कर' दरअसल स्वस्थ और खुशहाल जीवन की कुंजी है। हम मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा, चर्च आदि किसी भी पूजा-स्थल पर जाते हों तो जाएं। भजन-कीर्तन करते हों तो करें। माला जपते हों तो जपें। उसमें कुछ भी बदलने की आवश्यकता नहीं है। समझना सिर्फ ये है कि ये सब अध्यात्म की शुरुआती सीढियां हैं। अध्यात्म में आगे तब बढ़ेंगे जब हम खुद भगवान हो जाएंगे, तो हमारा हर काम खुद-ब-खुद परमात्मा को समर्पित होता चला जाएगा। जीवन सिर्फ स्वस्थ ही नहीं होगा, खुशनुमा भी होगा और खुशहाल भी होगा। स्पिरिचुअल हीलिंग, यानी आध्यात्मिक उपचार इस मामले में हमारे लिए सबसे उपयुक्त साधन है, जो हमें हमारी मानसिकता बदलने, मन के अशुद्ध विचारों को बदलने की शक्ति देता है। एक अनुभवी स्पिरिचुअल हीलर हमें केवल आधे घंटे में समाधि की अवस्था में ले जाकर वह सिखा सकता है जो अक्सर हम जीवन भर के प्रयत्नों से भी नहीं सीख पाते। एक स्पिरिचुअल हीलर और सहज संन्यासी के रूप में मैं यही बताने की कोशिश करता हूं कि निष्काम कर्म ही हमारा धर्म है। हम केवल निष्काम कर्म के धर्म को अपना लें तो फिर और कुछ बदलने की आवश्यकता नहीं रह जाती, क्योंकि निष्काम कर्म को जीवन में उतार लें तो जीवन ही बदल जाता है, और यही तो करना है। इतना ही करना है, बस।

संपादक की कलम से

भाजपा की खातिरदारी में

पौधे फिर से जमीन से, उखड़े अपनी जमीर पर। कौन किसको झटका दे गया, कौन दे रहा और कौन दे पाएगा, इसको लेकर हिमाचल की राजनीति को खुद पर संशय है। भाजपा लगातार कांग्रेस को हैरान करने के सामथ्र्य में, अधिकांश भाजपाइयों को परेशान करने की जहमत उठा रही है। ऐसा जिगरा राजनीति के संदर्भों को पलटी मार रहा है या फैसलों की फेहरिस्त में अति आत्मविश्वास का खतरा पनप रहा है। पहले मंडी से कंगना और कांगड़ा से डा. राजीव भारद्वाज को उतार कर भाजपा ने कई कतारबद्ध पंक्तियां तोड़ी हैं, तो अब कल तक कांग्रेस के बागी विधायक ठहराए गए, आगामी उपचुनाव के गाल सहलाते हुए भाजपा के उम्मीदवार बने हैं। सभी छह पूर्व कांग्रेसी विधायक भाजपा की गलबहियों में ऐसा भविष्य संवारना चाहते हैं, जिसकी परिणति में अतीत और वर्तमान का बैर चस्पां है। इस फैसले का रायता कितना फैलता है, कुछ अंदाजा बेचारे मेहमानों के स्वागत पर छाई मायूसी बता रही है। पहले सवाल पचाने का है, फिर आगे बढ़ाने का है। ऐसा भी नहीं कि भाजपा की खातिरदारी में कोई कमी रहेगी, लेकिन चूल्हे पर चढ़ी तरकारी शिकायत कर रही। कमाल तो यह कि भाजपा द्वारा छह के छह पूर्व कांग्रेसी विधायकों को अपनाने के अपनत्व का घनत्व, गहरे राज लिए है। यह फांस किसके लिए संपूर्ण क्रांति लाती है, यह कहना ठीक से भले ही मुश्किल हो, लेकिन दलबल का जादू शीर्षासन अवश्य कर रहा है।

नई संगत में पारंगत होने की चुनौती देवेंद्र कुमार भुट्टो, चैतन्य शर्मा, रवि कुमार, इंद्रदत्त लखन पाल, राजिंद्र राणा से सुधीर शर्मा तक है, तो इसकी सबसे बड़ी वजह भाजपा के भीतर ठनक रही थाली बता रही है। कुछ तो है तेरे मदीने में, वरना लोग क्यों घुटनों के बल फरियाद करते। जो आशंकाएं कंगना रनौत के आने से मंडी महसूस कर रही थी, उसका समाधान सोशल मीडिया कर रहा है। कंगना बनाम सुप्रिया श्रीनेत विवाद में झूमती राजनीति बता रही है कि उम्मीदवार दिया है तो भाजपा ने इंतजाम भी किया है। इसी तरह उपचुनाव में कांग्रेस के पूर्व विधायक झौंके हैं, तो घर और बाहर झाड़ू का इंतजाम किया है। यह सिर्फ नहले पे दहला का चुनाव न होता तो हिमाचल में सत्तारूढ़ कांग्रेस राज्यसभा की सीट न गंवाती, लेकिन इस बार चुनावी घालमेल में बड़ा व्यापार और हिसाब होगा। यह हिसाब कांग्रेस को लगाना है कि अपने ही विधायकों द्वारा खाली की गई सीटों पर अब किसे खड़ा करे। दूसरी ओर भाजपा को अपना राजनीतिक व्यापार दिखा कर घर को शांत और कांग्रेस के मोहल्ले को परेशान कैसे करना है। मंडी की सीट पर कंगना रनौत के बहाने स्त्री अस्मिता के प्रश्न पैदा करके भाजपा ने अपने चक्रव्यूह की रेंज बता दी है। पार्टी के पुराने घोड़े भले ही भगदड़ की चेतावनी दे रहे हैं, लेकिन भाजपा के अस्तबल में नए दौड़ रहे हैं। आखिर जनता केंद्र में जिसकी सरकार आने का सोच रही है, उसी की निगाह में उपचुनाव तौले जाएंगे।

अगर दिल्ली में परिवर्तन की सुगबुगाहट सुनाई दी, तो सुक्खू के दिशा परिवर्तन में उपचुनाव लिखे जाएंगे, वरना फिर हिमाचल का मन ये उपचुनाव बताएंगे। आंकड़ों की रद्दोबदल में आरंभिक तौर पर कांग्रेस को बस एक कदम जीतना है, लेकिन दूसरे पलड़े का बढ़ता बोझ जख्मों को कितना सालता है, यह भी देखना है। कहना न होगा कि भाजपा फिर से घेराबंदी की फितरत में कांग्रेस को नचा सकती है, लेकिन इस बार घर के भीतर उठते बवाल को भी तो काबू में रखना होगा। निश्चित रूप से कांग्रेस के बागी विधायक इतने भी हल्के नहीं कि अपने हलकों में यूं ही शून्य हो जाएंगे। उन्हें सिर्फ यह वजह बतानी है कि क्यों अपनी ही सरकार की वजह से वे दरकिनार हुए। उनके पास सरकार के विरोध में सिर्फ तकरार नहीं, जनापेक्षाओं से जुड़े आंदोलन भी हैं। अपनी ही डेढ़ साल की सरकार की डींगों को पीटने के लिए मुद्दों के जमात, ये विरोधी उपचुनाव भी तो साबित हो सकते हैं।

राय

क्या चीन निशाने पर'?

पाकिस्तान में दो वारदातें ऐसी हुई हैं, जिनका निशाना चीनी नागरिकों की तरफ लगता है। पाकिस्तान की सुरक्षा समस्याएं एक बार फिर बदतर होती जा रही हैं। एक घटना बीते सोमवार को हुई, जब 'बलोच मुक्ति सेना' के चरमपंथियों ने पाकिस्तान के नौसेना बेस 'पीएनएस सिद्धिक' में घुसने की कोशिश की। यह खबर जानबूझ कर छिपा दी गई, अलबत्ता इसके फलितार्थ बेहद गंभीर हो सकते थे। यह हमलानुमा प्रयास ग्वादर बंदरगाह क्षेत्र पर किए गए हमले के करीब एक सप्ताह बाद किया गया। हालांकि सुरक्षा बलों ने हमले को नाकाम कर दिया। ग्वादर चीन पाकिस्तान आर्थिक कॉरिडोर का केंद्रीय स्थान है, जबकि नौसेना बेस चीनी ड्रोन्स का आतिथ्य करता है। यदि बलोच चरमपंथी नौसेना अड्डे में घुसने में कामयाब हो जाते, तो न जाने क्या हो सकता था? पाकिस्तान के अशांत क्षेत्र-खैबर पख्तूनख्वा-में 'बलोच मुक्ति सेना' अपनी आजादी की लड़ाई लड़ रही है। खनिजों से सम्पन्न बलूचिस्तान पाकिस्तान के व्यवहार, रवैये और वहां की हुकूमत को 'साम्राज्यवादी' करार देता रहा है। वहां के चरमपंथी पाकिस्तान की फौज पर भी हमले करते रहे हैं। चूंकि आर्थिक कॉरिडोर को 'बलोच चरमपंथी' पाकिस्तान के औसत गरीब को लूटने वाली परियोजना मानते रहे हैं। इससे फौज के जनरलों के 'संभ्रांत वर्ग' को ही फायदा है, क्योंकि उन्हें करोड़ों डॉलर के नए कर्ज चीन से मिलते रहे हैं। बहरहाल दूसरी वारदात एक आतंकी हमले सरीखी थी।

बीते मंगलवार को पाकिस्तान के उत्तर-पश्चिम में एक आत्मघाती हमले में चरमपंथियों ने 5 चीनी इंजीनियरों और एक पाकिस्तानी वाहन चालक को मार दिया। हमलावरों ने विस्फोटकों से भरे वाहन से उनकी गाड़ी को टक्कर मारी और विस्फोट जानलेवा साबित हुआ। चीनी इंजीनियर एक पनबिजली परियोजना पर काम कर रहे थे। हमला उस वक्त किया गया, जब वे इस्लामाबाद से कोहिस्तान की ओर जा रहे थे। आत्मघाती हमले से साफ है कि पाकिस्तान में आर्थिक कॉरिडोर के लिए सब कुछ ठीक नहीं है। चरमपंथी हुकूमत और फौज के प्रिय दोस्तों, चीनियों को, भी निशाना बना रहे हैं। हालांकि ऐसे चीनी इंजीनियरों को पाकिस्तान में पर्याप्त सुरक्षा-व्यवस्था मुहैया कराई जा रही है, लेकिन हमले रुक नहीं पा रहे हैं। 2023 में भी ग्वादर में चीनी नागरिकों पर हमला किया गया था, जिसमें चार चीनी मारे गए थे। पाकिस्तान आतंकवाद को अपने फायदे के लिए इस्तेमाल करने में 'मास्टर' है। 'बलोच मुक्ति सेना' वर्षों से इस्लामाबाद के लिए 'कांटा' साबित होती रही है। पाकिस्तान के लिए आतंकवाद कई मायनों में स्वीकार्य है। हालांकि वहां भी आतंकवाद ने हजारों मासूम नागरिकों की जिंदगी छीनी है, फिर भी आतंकी हमलों से पाकिस्तान न तो चिंतित होता है और न ही बेचैन होता है। अब चीनी इंजीनियरों की हत्या को लेकर पाकिस्तान अपनी पुरानी दलीलें दे सकता है, लेकिन चीन भी उससे विमुख नहीं हो सकता, क्योंकि कॉरिडोर पर अरबों डॉलर खर्च किए जा चुके हैं और यह चीन के लिए बेहद महत्वाकांक्षी परियोजना है। पाकिस्तान के नौसेना और हवाई सेना के कई अड्डों पर चीन का अघोषित कब्जा है। यह रणनीतिक तैनाती भी वह छोड़ नहीं सकता। पाकिस्तान आतंकवाद के कई अन्य मोर्चों पर नाकाम रहा है। मसलन-इस्लामाबाद से नवम्बर, 2022 में युद्धविराम समाप्त होने के बाद पाक तालिबानियों ने हमलों की रफ्तार बढ़ा दी है। जब अफगानिस्तान में तालिबान की हुकूमत बन रही थी, तब पाकिस्तान बहुत उछल रहा है। तत्कालीन प्रधानमंत्री इमरान खान ने 'जंजीरों के टूटने' की बात कही थी। तब पाकिस्तान तालिबानी लड़ाकों को प्रशिक्षण देने के पक्ष में था। अब वही तालिबान पाकिस्तान के लिए 'भस्मासुर' बने हैं। चीन को एहसास है कि उसने पाकिस्तान को जितना कर्ज दिया है, उसकी वापसी मुनासिब नहीं है, लेकिन चीन सार्वजनिक तौर पर यह कबूल भी नहीं कर सकता।

सपने के टूटते कगार

अभी हमने सिर उठाया भी नहीं, कि उससे पहले ही उन्हें खतरा पैदा हो गया, कि ये लोग सिर उठाएंगे तो जीने की राह मांगेंगे। पीठ भरने का वसीला मांगेंगे। खोई हुई जानों का हिसाब मांगेंगे। इसलिए इससे क्या बेहतर नहीं कि ये सिर उसी प्रकार झुके रहें, और अपनी जान और माल की खैर खैरियत हमसे मांगते रहें। आप पूछ सकते हैं, कौनसी जान और कौनसा माल? क्या वह जान जो संक्रमित होकर इसलिए दम तोड़ गई, कि उसके फेफड़ों को चालू रखने के लिए प्राण वायु के सिलेंडर नहीं थे। किस माल की हिफाजत करने की बात कहते हैं आप? सुना नहीं है क्या, जर, जोरू और जमीन पर कब्जा ताकत वाले का होता है। ताकत तो अपने वंश दर वंश हवेलियों वालों को सौंप दी। रजवाड़ाशाही खत्म हो गई। देश के करोड़ों बांके नौजवानों ने एक लंबी लड़ाई लड़ कर सामंतवाद को नेस्तनाबूद कर दिया है। इतिहास ने बताया। फिर यहां बदल कर कहां से नए रजवाड़े और नए सामंत आ गए? ये नाम जनता के राज का लेते हैं और पहले तो उम्र भर अपनी कुर्सी नहीं छोड़ते, फिर वंशगत परम्परा में उनके वारिसों, आने वाले सब वारिसों की वोटों की वसीयत अपने नाम करवा लेते हैं। वोट डालने के दिन नजदीक आते हैं, तो जनता जनार्दन के टूटे सपनों के रूप खण्डहरों की मरम्मत होने लगती है।

उन्हें नई वायवीय घोषणाओं की बैसाखियों के साथ खड़ा करके उपलब्धियों का एक नया सब्जबाग बना कर पेश कर दिया जाता है। इस जमाने का कोई भरोसा नहीं है, साब। जाने कब करवट बदल ले। जाने किस दांव अपना हाथ बदल अपनी हार को जीत में बदल दे। वैसे भी जीत का लड्डू हमेशा ही ऊपर वालों के हाथ रहता है। तब भी जब वोटें पडने का मौसम करीब आया, और आपने युगों से लम्बित अच्छे दिनों का सपना साकार होने का एक ट्रेलर हमें दिखा दिया और पूरी फिल्म दिखाने का सपना भविष्य के कंधों पर लाद दिया। लेकिन याद रखिए, कल, आज और कल में जो बीत गया वह कल तो कभी मुडक़र आता नहीं और आने वाला कल कभी मिलता नहीं, जब भी मिलेगा, वह यही आज बन कर ही मिलता है। वही रंग उतरा आज जिसमें आने वाले दिनों में अच्छे दिन दे देने के वायदों को दोहराया जाता है। उन लोगों ने दोहराया है, जो बरसों बाद आपका और भी निर्जीव होता चेहरा पहचानने चले आए थे। नए वायदों के कनकौओं के साथ, एक बार फिर से आकाश में उडने का एहसास दे रहे हैं। यह वे एहसास हैं जो काम किए बिना देश के आत्मनिर्भर हो जाने की तस्वीर बनाते हैं। आंकड़ों के ऐसे खेल दिखाते हैं कि गिरावट की ओर सटपट भागती अर्थव्यवस्था का शेयर सूचकांक बल्लियों उछलने लगता है। इन्होंने पूरा विश्व एक मंडी बना देने का वायदा किया था न। लीजिये पूरे विश्व में पैट्रोल और डीजल की कीमतें कम हो गईं हैं, फिर भी देश की चाल धीमी हो गई तो क्या? इस देश के लोगों को तो वैसे ही कीड़ी चाल से रेंगने की आदत है। धरती पर रेंगना और आकाशचारी होकर विकास के आंकड़ों के वायुयान की सवारी करना इनकी पुरानी आदत है। भैया, ये आंकड़े बहुत बड़ी चीज हैं। आप जितना चाहें आंकड़ों की सत्यता की जांच कर वैकल्पिक आंकड़े ले आएं, हमने संकट बचा लिया और अपनी कुर्सी भी। बस अब चुप लगा जाइए और अपनी जानों को कुर्सीधारियों की अमानत मानिए। वे खैरात बांटते रहेंगे, अब बस दुआओं से काम चलाइए। बदलाव के नारे मंचों तक सीमित रहे तो बेहतर।

सुरेश सेठ

विचार

बड़ा भंगाल : चुनौतियां अपार, आकर्षण बरकरार

हिमाचल सरकार गर्मियों के सीजन में यदि चार महीनों के लिए ही सही, ऑनलाइन बुकिंग द्वारा हेलीकाप्टर सेवा और बड़ा भंगाल में पर्यटकों के रहने-खाने की व्यवस्था एक पैकेज के तहत व्यवस्थित तरीके से करे, तो निश्चित तौर पर बड़ी संख्या में पर्यटक यहां आना और ठहरना चाहेंगे, जिससे न केवल बड़ा भंगाल क्षेत्र में पर्यटक गतिविधियों को बढ़ावा मिलेगा, अपितु राज्य की आर्थिकी को भी मजबूती मिलेगी। क्षेत्र की समस्याओं का समाधान जल्द हो

पहाड़ों की ऊंचाइयों को फतह कर चोटी पर पहुंचने की चाहत हमेशा से मनुष्य को कुछ अद्भुत कर गुजरने के लिए प्रोत्साहित करती रही है। इसलिए संसाधनों के अभाव के बावजूद विश्व के दुर्गम इलाकों तक भी मनुष्य ने अपने जोश और जुनून के चलते पहुंच बनाई है। चाहे वह एवरेस्ट पर्वत हो अथवा उत्तरी और दक्षिणी ध्रुवों की खोज, कुछ हटकर करने की चाहत के चलते ही हजारों लोगों ने अपने नाम गिनीज बुक ऑफ वल्र्ड रिकॉर्ड्स में दर्ज करवाने में सफलताएं हासिल की हैं। आज भी भारत और हिमाचल सहित अनेक राज्यों में ऐसे दर्शनीय स्थल हैं जहां पहुंचना अभी भी असंभव समझा जाता है। हिमाचल प्रदेश में एक ऐसा ही रमणीय अनछुआ और प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर बैजनाथ उपमंडल का बड़ा भंगाल क्षेत्र है जहां सडक़ सुविधा न होने के कारण पहुंचना किसी चुनौती से कम नहीं माना जाता है। हिमालय की धौलाधार श्रृंखला में समुद्र तल से 2550 मीटर की ऊंचाई पर स्थित बड़ा भंगाल एक सुंदर घाटी है।

यह घाटी विशाल पहाड़ों से घिरी हुई है और बर्फ से ढकी चोटियों, हरे-भरे घास के मैदानों और चमचमाती नदियों के मनमोहक दृश्य प्रस्तुत करती है। 169 घरों और 620 के लगभग आबादी वाले बड़ा भंगाल गांव में लोग लगभग 7 महीने ही रहते हैं और जब बर्फ पड़ती है तो अधिकांश लोग बीड़ बिल्लिंग में आ जाते हैं जहां उनके घर हैं अथवा वे किराए के घरों में रहते हैं। इसी प्रकार वहां का स्कूल और पढने वाले बच्चे भी बीड़ स्थित स्कूल में स्थानांतरित हो जाते हैं। यहां पहुंचने के लिए बेहद दुर्गम, ढांकयुक्त खतरनाक दर्रों और पहाड़ों से होकर पहुंचना होता है। ढांकें इतनी खतरनाक कि एक बार पैर फिसला तो फिर बचाने वाला कोई नहीं। रोजगार के नाम पर जंगल से लकडियां चुनना, पशुपालन और भेड़-बकरियां पालना यहां के लोगों की मुख्य गतिविधियां हैं। दुर्गम इलाके में होने की वजह से और सडक़ मार्ग न होने के कारण इस गांव का भारत के शेष क्षेत्रों से संपर्क कटा रहता है। लोगों की आवाजाही बहुत कम है, सर्दियों में केवल बुजुर्ग लोग ही वहां घरों और पशुधन की देखभाल के लिए रह जाते हैं, जिनके समक्ष भयानक सर्दी जनित समस्याएं बरकरार रहती हैं। बड़ा भंगाल में एक आयुर्वेदिक डिस्पेंसरी, पशु औषधालय, स्कूल, पीडब्ल्यूडी, आईपीएच और इलेक्ट्रिसिटी विभाग के कार्यालय तो हैं, लेकिन वहां कर्मचारियों की कमी खलती है। साईं फाउंडेशन ने वर्ष 2003-04 में 40 किलोवाट का एक हाइडल इलेक्ट्रिसिटी प्रोजेक्ट बड़ा भंगाल में लगाया था, लेकिन बाद में रखरखाव के अभाव के कारण वह बंद पड़ा है।

बड़ा भंगाल के लोगों की 9 मांगें हैं जिनमें मुख्यतः सडक़ निर्माण, बिजली घर को ठीक करना, सामाजिक पेंशनधारकों को पेंशन राशि का समयबद्ध वितरण, जिनके बैंक अकाउंट बीड़ में हैं, लेकिन वह पिछले 4 सालों से अस्वस्थ होने की वजह से नहीं जा पा रहे हैं, को हेली सुविधा उपलब्ध करवाना शामिल हैं। बर्फ के दिनों में क्योंकि दो-ढाई सौ लोग ही गांव में रहते हैं, बीमार लोगों को मौके पर स्वास्थ्य सुविधाएं पहुंचे, इसके लिए हेली सर्विस की मांग भी प्रमुख है। बड़ा भंगाल गांव में जो हेलिपैड है, उसे मरम्मत की दरकार है ताकि हेलिकॉप्टर की सुरक्षित लैंडिंग हो सके। जब बात पहाड़ों पर चढने की और वादियों को निहारने की और ट्रैकिंग की आती है, तो शायद हिमाचल से बढिया एडवेंचर डेस्टिनेशन कोई दूसरा नहीं हो सकता है। उसमें भी बड़ा भंगाल एक ऐसा क्षेत्र है जिसे अनछुआ और चुनौतीपूर्ण समझते हुए साहसिक गतिविधियों में रुचि रखने वाले लोग ही वहां पहुंचना पसंद करते हैं। प्रतिवर्ष 200-300 ट्रैकर्स कुल्लू की काली हाणिएए होली (चंबा) के रास्ते से और मुल्थान वाया थामसर जोत, बड़ा भंगाल पहुंचते हैं। एडवेंचर और ट्रैकिंग में रुचि रखने वाले लोग यहां आते रहते हैं जिनमें विदेशियों की काफी संख्या रहती है। अधिकांश टूरिस्ट और ट्रैकर्स अपने गाइड के साथ ही आते हैं। बड़ा भंगाल गांव की साक्षरता दर कम है। मनोरंजन के कोई साधन नहीं हैं। यहां के अधिसंख्य लोग ठाकुर राजपूत जातियों के हैं जिन्हें सरकार ने ओबीसी कैटेगरी में रखा है, लेकिन इनकी मांग है कि इन्हें अनुसूचित जनजाति का दर्जा दिया जाए।

बड़ा भंगाल का इलाका वाइल्ड लाइफ सेंक्चुरी के अंतर्गत आता है। इसलिए रास्तों एवं अन्य निर्माण कार्यों हेतु वन विभाग की स्वीकृति की आवश्यकता रहती है। इस प्रक्रिया को सरकार को आसान बनाना चाहिए। जिलाधीश कांगड़ा ने होली-चंबा के रास्ते जाने वाली पैदल पथ की मरम्मत के लिए 5 लाख और सोलर लाइट्स के लिए 10 लाख रुपए देने की घोषणा की थी। यह प्रसन्नता का विषय है कि इन्वर्टर और अन्य सामग्री घोड़े-खच्चरों द्वारा बड़ा भंगाल पहुंचाई जा चुकी है, जबकि हेलीकॉप्टर के माध्यम से सोलर पैनल भी पहुंचाए जा चुके हैं। हिम ऊर्जा विभाग (हिमाचल प्रदेश) द्वारा 61 लाख रुपए की लागत से 169 सोलर लाइट्स किट्स लगाई जा चुकी हैं। खुशी की बात है कि पिछली सर्दियों से पहले पहले बड़ा भंगाल के सभी 169 घरों में सोलर लाइट्स से घर रोशन हो चुके थे। सेक्रेटरी पीडब्ल्यूडी ने सडक़ निकालने और बंद पड़े सडक़ मार्ग के निर्माण कार्य को आगे बढ़ाने के आदेश दिए हैं। हिमाचल सरकार गर्मियों के सीजन में यदि चार महीनों के लिए ही सही ऑनलाइन बुकिंग द्वारा हेलीकाप्टर सेवा और बड़ा भंगाल में पर्यटकों के रहने-खाने की व्यवस्था एक पैकेज के तहत व्यवस्थित तरीके से करे तो निश्चित तौर पर बड़ी संख्या में पर्यटक यहां आना और ठहरना चाहेंगे, जिससे न केवल बड़ा भंगाल क्षेत्र में पर्यटक गतिविधियों को बढ़ावा मिलेगा, अपितु राज्य की आर्थिकी को भी मजबूती मिलेगी। इस क्षेत्र की समस्याओं का समाधान प्राथमिकता से होना चाहिए।

अनुज आचार्य

'भारतीय अर्थव्यवस्था 2047 तक आठ प्रतिशत की दर से बढ़ सकती है, अगर...'

भारत की अर्थव्यवस्था 2023 के अंतिम तीन महीनों में उम्मीद से बेहतर 8.4 प्रतिशत की दर से बढ़ी जो पिछले डेढ़ साल में सबसे तेज गति है। अक्टूबर-दिसंबर में वृद्धि दर के दम पर चालू वित्त वर्ष के अनुमान को 7.6 प्रतिशत तक बढ़ा दिया गया। सुब्रमण्यम ने कहा अगर भारत आठ प्रतिशत की दर से बढ़ता है तो 2047 तक भारत 55000 अरब डालर की अर्थव्यवस्था बन सकता है।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आइएमएफ) में भारत के कार्यकारी निदेशक कृष्णमूर्ति वेंकट सुब्रमण्यम ने कहा कि अगर देश पिछले 10 वर्षों में लागू की गई अच्छी नीतियों को दोगुना कर सके और सुधारों में तेजी लाए तो भारतीय अर्थव्यवस्था 2047 तक आठ प्रतिशत की दर से बढ़ सकती है। सुब्रमण्यम ने कहा कि स्पष्ट रूप से आठ प्रतिशत की वृद्धि दर महत्वाकांक्षी है क्योंकि भारत पहले लगातार आठ प्रतिशत की दर से नहीं बढ़ पाया है, लेकिन इसे हासिल किया जा सकता है।

वेंकट सुब्रमण्यम ने एक कार्यक्रम में गुरुवार को कहा, 'पिछले 10 वर्षों में भारत ने जिस तरह की वृद्धि दर्ज की है, अगर हम पिछले 10 वर्षों में लागू की गई अच्छी नीतियों को दोगुना कर सकते हैं और सुधारों में तेजी लाएं तो भारत यहां से 2047 तक आठ प्रतिशत की दर से वृद्धि कर सकता है।'

भारत की अर्थव्यवस्था 2023 के अंतिम तीन महीनों में उम्मीद से बेहतर 8.4 प्रतिशत की दर से बढ़ी, जो पिछले डेढ़ साल में सबसे तेज गति है। अक्टूबर-दिसंबर में वृद्धि दर के दम पर चालू वित्त वर्ष के अनुमान को 7.6 प्रतिशत तक बढ़ा दिया गया।

सुब्रमण्यम ने कहा, "अगर भारत आठ प्रतिशत की दर से बढ़ता है, तो 2047 तक भारत 55000 अरब डालर की अर्थव्यवस्था बन सकता है।" आइएमएफ में भारत के कार्यकारी निदेशक ने रोजगार सृजन के लिए मैन्यूफैक्चरिंग सेक्टर को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता पर भी जोर दिया।

सुब्रमण्यन ने साथ ही यह भी कहा, ₹मैन्यूफैक्चरिंग सेक्टर में सुधार की आवश्यकता तो है ही, लेकिन साथ ही, हमें इस क्षेत्र के लिए ऋण प्रदान करने के लिए अपने बैंकिंग क्षेत्र में भी सुधार की आवश्यकता है।

फरवरी के अंत तक राजकोषीय घाटा सालाना लक्ष्य के 86.5 प्रतिशत पर

लेखा महानियंत्रक (सीजीए) द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार फरवरी 2024 तक सरकार की कुल प्राप्तियां 22.45 लाख करोड़ रुपये रही हैं। यह 2023-24 के संशोधित अनुमान का 81.5 प्रतिशत है। केंद्र द्वारा किया गया कुल व्यय 37.47 लाख करोड़ रुपये रहा जो चालू वित्त वर्ष के संशोधित अनुमान का 83.4 प्रतिशत है। सरकार के व्यय और राजस्व के बीच के अंतर को राजकोषीय घाटा कहा जाता है।

नई दिल्ली। सरकार का राजकोषीय घाटा चालू वित्त वर्ष (2023-24) में फरवरी के अंत तक संशोधित लक्ष्य का 86.5 प्रतिशत या 15 लाख करोड़ रुपये रहा है। गुरुवार को जारी आधिकारिक आंकड़ों में यह जानकारी दी गई। बीते वित्त वर्ष की समान अवधि में राजकोषीय घाटा यानी व्यय और राजस्व का अंतर बजट 2022-23 के संशोधित अनुमान (आरई) का 82.8 प्रतिशत रहा था। चालू वित्त वर्ष (2023-24) में राजकोषीय घाटा 17.35 लाख करोड़ रुपये या सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का 5.8 प्रतिशत रहने का अनुमान है। लेखा महानियंत्रक (सीजीए) द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार, फरवरी, 2024 तक सरकार की कुल प्राप्तियां 22.45 लाख करोड़ रुपये रही हैं। यह 2023-24 के संशोधित अनुमान का 81.5 प्रतिशत है। केंद्र द्वारा किया गया कुल व्यय 37.47 लाख करोड़ रुपये रहा, जो चालू वित्त वर्ष के संशोधित अनुमान का 83.4 प्रतिशत है। सरकार के व्यय और राजस्व के बीच के अंतर को राजकोषीय घाटा कहा जाता है।

वित्तीय वर्ष के पहले 11 महीनों में, सरकारी पूंजीगत व्यय या भौतिक बुनियादी ढांचे के निर्माण पर खर्च 8.06 ट्रिलियन रुपये या वार्षिक लक्ष्य का 85% था, जो कि एक साल पहले की अवधि में 5.90 ट्रिलियन रुपये से अधिक था। भारत ने चालू वित्तीय वर्ष के लिए अपने राजकोषीय घाटे के लक्ष्य को 10 आधार अंक कम करके सकल घरेलू उत्पाद का 5.8% कर दिया है, अगले वित्तीय वर्ष में इसे और घटाकर 5.1% करने का लक्ष्य है।

यूएस फेडरल रिजर्व ने ब्याज दरों में नहीं किया बदलाव, 2024 में 3 कटौती का जताया अनुमान

कर कई फैसले लिये गए हैं। फेड रिजर्व ने बताया कि उन्होंने सर्वसम्मति के साथ बेंचमार्क ब्याज दरों को स्थिर रखने का फैसला लिया है। इसका मतलब है कि ब्याज दर 5.25 से 5.50 फीसदी पर स्थिर रहेगी।

बता दें कि अमेरिका के केंद्रीय बैंक ने जुलाई से प्रमुख ब्याज दरों को 23 वर्ष के उच्चतम स्थिर पर बनाए रखा है। हालांकि फेड मे उम्मीद जताई है कि 2024 के अंत में ब्याज दरों में 3 कटौती की जा सकती है। फेडरल रिजर्व के अध्यक्ष जेरोम पॉवेल (Federal Reserve Chair Jerome Powell) ने कहा कि हालिया महंगाई दर की वजह से ब्याज दर में कोई बदलाव नहीं किया गया है। हालांकि, केंद्रीय बैंक साल के अंत में तीन ब्याज दरों में कटौती कर सकता है। इसके अलावा उन्होंने कहा कि अमेरिका में आर्थिक विकास जारी रहेगा। फेड ने नए त्रैमासिक आर्थिक अनुमान जारी किये हैं। इन अनुमान को लेकर कई अधिकारियों ने अनुमान जताया है कि इस वर्ष इकोनॉमी में 2.1 फीसदी की वृद्धि हो सकती है। वहीं 2024 के अंत में बेरोजगारी दर भी 4 फीसदी तक पहुंचने की उम्मीद है। जेरोम पॉवेल ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि देश में महंगाई दर में गिरावट देखने को मिली है पर हम उसे 2 फीसदी तक लाने के लिए प्रतिबद्ध है। देश में बेरोजगारी दर को भी कम करने के लिए फेड द्वारा कदम उठाए जा सकते हैं।

23 वर्ष के उच्चतम स्तर पर ब्याज दरें

यूएस फेड (US Fed) ने ब्याज दरों को 22 साल के उच्चतम स्तर पर बनाए रखा है। हालांकि उन्होंने संकेत दिया है कि देश की आर्थिक गतिविधियां सही दिशा में बढ़ रही है। इसके अलावा महंगाई से भी लोगों को एक हद तक राहत मिली है।

बता दें कि अगर अमेरिका में ब्याज दर में बढ़ोतरी करता है तो इंटरेस्ट रेट भी बढ़ जाता है। इंटरेस्ट रेट के बढ़ जाने से महंगाई में तेजी आती है। जिसके बाद इकोनॉमी और बैंकों पर दबाव पड़ जाता है और आर्थिक गतिविधियां धीमी हो जाती है।

इंटरेस्ट रेट में जैसे ही तेजी आती है तो डॉलर के मूल्य में भी बढ़त देखने को मिलती है। इसका असर भारतीय करेंसी पर पड़ता है। डॉलर के मुकाबले रुपया कमजोर हो जाता है। रुपये के मूल्य में गिरावट आने के बाद निवेशक

आगे भी जारी रहेगी तेज विकास दर, सभी राज्य सक्रिय रूप से करें हिस्सेदारी: निर्मला सीतारमण

तिरुवनंतपुरम से भाजपा उम्मीदवार राजीव चंद्रशेखर की ओर से आयोजित एक कार्यक्रम के दौरान सीतारमण ने चुनौतियों के बीच भारतीय अर्थव्यवस्था के लचीलेपन पर जोर देते हुए कहा अगर अर्थव्यवस्था सभी दिक्कतों के बाद भी इस स्तर तक पहुंच गई है तो हमें विश्वास है कि हम विकास की गति को भविष्य में भी बनाए रख सकते हैं। आइए पूरी खबर के बारे में जान लेते हैं।

तिरुअनंतपुरम। केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने एक बार फिर भारत की आर्थिक वृद्धि की गति पर विश्वास जताया है। उन्होंने लगातार तीन तिमाहियों में आठ प्रतिशत से अधिक की विकास दर का हवाला देते हुए कहा कि हम आगे भी विकास दर को बनाए रख सकते हैं। उन्होंने कहा कि तीसरी तिमाही में उल्लेखनीय 8.3 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई।

तिरुवनंतपुरम से भाजपा उम्मीदवार राजीव चंद्रशेखर की ओर से आयोजित एक कार्यक्रम के दौरान सीतारमण ने चुनौतियों के बीच भारतीय अर्थव्यवस्था के लचीलेपन पर जोर देते हुए कहा, "अगर अर्थव्यवस्था सभी दिक्कतों के बाद भी इस स्तर तक पहुंच गई है तो हमें विश्वास है कि हम विकास की गति को भविष्य में भी बनाए रख सकते हैं।"

निरंतर विकास के लिए सामूहिक प्रयास को जरूरी बताते हुए उन्होंने प्रत्येक राज्य से भारत के आर्थिक विकास में सक्रिय रूप से भाग लेने का आह्वान किया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि विकास के चक्र को राजनीतिक सीमाओं में नहीं बांधा जा सकता है और इसका लाभ पूरे देश के युवाओं को होता है। सीतारमण ने निवेशकों के बीच भारत के बढ़ते आकर्षण का उल्लेख किया और इसका श्रेय मध्यम वर्ग की बढ़ती क्रय क्षमता को दिया।

आर्थिक विकास के लिए सरकार की प्रतिबद्धता दोहराई

वित्त मंत्री का अनुमान है कि 2030 तक मध्यम वर्ग की आबादी 70 करोड़ हो जाएगी और जब देश अपनी स्वतंत्रता की 100वीं वर्षगांठ मना रहा होगा कि तो यह आबादी लगभग 100 करोड़ होगी। उन्होंने भारत में आर्थिक गतिविधियों और सेवा क्षेत्र के विकास की अपार संभावनाओं का जिक्र करते हुए इन अवसरों का लाभ उठाने की आवश्यकता पर जोर दिया।

सीतारमण ने आर्थिक विकास को समर्थन देने के लिए सरकार की प्रतिबद्धता पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि इस बात का प्रमाण इससे भी मिलता है कि 2020 के बाद से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष कराधान दरों में कोई बढ़ोतरी नहीं की गई है।

देश की विकास यात्रा में प्रत्येक राज्य को सक्रिय रूप से हिस्सा लेना चाहिए। यह भारत की वृद्धि है, न कि केवल एक पार्टी या राज्य की। इसका लाभ देश के युवाओं को मिलेगा। आज निवेशक भारत आ रहे हैं, क्योंकि वे यहां के बड़े मध्यम वर्ग को देख रहे हैं।

नोएडा एयरपोर्ट पर यह कंपनी चलाएगी रेस्टोरेंट और कैफे, निर्माण करने का भी मिला ठेका

नोएडा एयरपोर्ट ने जेवर हवाई अड्डे पर रेस्तरां कैफे और अन्य खाद्य दुकानों के निर्माण और संचालन के लिए एचएमएसहोस्ट इंडिया को एक कॉन्ट्रैक्ट पेश किया है।यह एनआईएएल द्वारा दिया गया दूसरा एफ एंड बी अनुबंध है। एनआईएएल उत्तर प्रदेश सरकार नोएडा प्राधिकरण ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण और YEIDA (यमुना एक्सप्रेसवे औद्योगिक विकास प्राधिकरण) के बीच एक संयुक्त उद्यम है। आइये इसके बारे में जानते हैं।

नोएडा। नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट लिमिटेड (एनआईएएल) ने गुरुवार को कहा कि उसने आगामी जेवर हवाई अड्डे पर रेस्तरां, कैफे और अन्य खाद्य दुकानों के निर्माण और संचालन के लिए एचएमएसहोस्ट इंडिया को एक कॉन्ट्रैक्ट पेश किया है।

आपको बता दें कि एचएमएसहोस्ट (HMSHost) इंडिया अवोल्टा एजी की एक सहायक कंपनी है, जो 75 देशों और 1,200 स्थानों में संचालन के साथ वैश्विक यात्रा अनुभव कंपनी है और तीन खंडों - एफ एंड बी (खाद्य और पेय), शुल्क-मुक्त और सुविधा में 5,500 बिक्री बिंदु हैं।

टीएफएस के साथ समझौता

यह एनआईएएल द्वारा दिया गया दूसरा एफ एंड बी अनुबंध है। एनआईएएल उत्तर प्रदेश सरकार, नोएडा प्राधिकरण, ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण और YEIDA (यमुना एक्सप्रेसवे औद्योगिक विकास प्राधिकरण) के बीच एक संयुक्त उद्यम है।

6 मार्च को, एनआईएएल ने हवाई अड्डे पर एक विश्व स्तरीय लाउंज के साथ-साथ बहु-व्यंजन भोजन और पेय आउटलेट स्थापित करने के लिए टीएफएस के साथ अपने पहले रियायतग्राही के रूप में समझौता किया था।

पश्चिमी उत्तर प्रदेश में गौतम बौद्ध नगर के जेवर क्षेत्र में दिल्ली से लगभग 75 किलोमीटर दूर स्थित हवाईअड्डा इस साल के अंत तक उड़ान संचालन शुरू करने वाला है।

एचएमएसहोस्ट इंडिया के साथ साझेदारी के साथ, एनआईएएल ने कहा कि इसका उद्देश्य पेशकशों की एक प्रभावशाली श्रृंखला तैयार करना है, जिसमें स्वच्छ वातावरण में गुणवत्तापूर्ण भोजन परोसा जाएगा और हवाई अड्डे पर समग्र अनुभव को बढ़ाया जाएगा।

किफायती भोजन क मिलेगा अनुभव

हवाईअड्डे ने एक बयान में कहा कि आउटलेट ग्राहकों को विश्व स्तरीय, फिर भी किफायती भोजन अनुभव प्रदान करेंगे।

हवाई अड्डे के सीईओ क्रिस्टोफ श्नेलमैन ने कहा कि आतिथ्य उद्योग में अपनी वैश्विक विशेषज्ञता के साथ, एनआईएएल को विश्वास है कि एचएमएसहोस्ट हवाई अड्डे के भोजन अनुभव में एक अद्वितीय और ग्राहक-अनुकूल माहौल लाएगा।

उन्होंने कहा कि हमारा लक्ष्य पेशकशों की एक प्रभावशाली श्रृंखला तैयार करना है जो वैश्विक व्यंजनों के साथ स्थानीय स्वादों को मिश्रित करता है, जिससे एक उचित संतुलन सुनिश्चित होता है जो विविध भूखों को पूरा करता है।

अवोल्टा में भारतीय उपमहाद्वीप के प्रबंध निदेशक जगवीर राणा ने कहा कि नोएडा अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे द्वारा हमें दिए गए अवसर के लिए हम बेहद सम्मानित और आभारी हैं...और सात बिल्कुल नए आउटलेट संचालित करते हैं। फिलहाल एयरपोर्ट के पहले चरण का विकास चल रहा है।

पहले चरण में, एक रनवे और एक टर्मिनल की सुविधा के साथ, हवाई अड्डे की क्षमता सालाना 12 मिलियन यात्रियों को संभालने की होगी। अधिकारियों के अनुसार, सभी चार चरणों के पूरा होने पर, हवाईअड्डा प्रति वर्ष 70 मिलियन यात्रियों को सेवा प्रदान करने में सक्षम होगा।

फिर महंगे हो गए सोना-चांदी, अब खरीदने के लिए चुकाने होंगे इतने रुपये

गुरुवार को गोल्ड-सिल्वर की कीमतों में तेजी देखने को मिली है। एचडीएफसी सिक्योरिटीज के अनुसार अंतरराष्ट्रीय बाजारों में मजबूत रुझान के बीच में दिल्ली में सोने की कीमत 350 रुपये बढ़कर 67350 रुपये और चांदी भी 200 रुपये उछलकर 77450 रुपये प्रति किलोग्राम हो गई है। अगर आप भी गोल्ड या सिल्वर खरीदने का सोच रहे हैं तो आपको एक बार लेटेस्ट रेट चेक करना चाहिए।

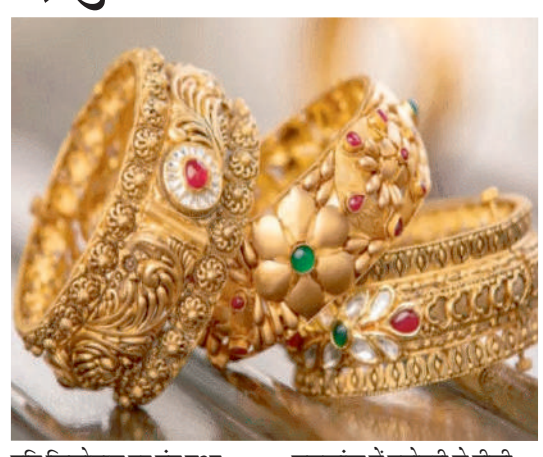

नई दिल्ली। सोना-चांदी निवेश के लिए काफी अच्छा ऑप्शन है। आज इन दोनों धातुओं की कीमतों में तेजी देखने को मिली है।

एचडीएफसी सिक्योरिटीज के अनुसार अंतरराष्ट्रीय बाजारों में मजबूत रुझान के बीच राष्ट्रीय राजधानी में गुरुवार को सोने की कीमत 350 रुपये बढ़कर 67,350 रुपये प्रति 10 ग्राम हो गई।

लगातार दूसरे सत्र में सोने की कीमतों में तेजी देखने को मिली है। पिछले कारोबार में सोने की कीमत 67,000 रुपये प्रति 10 ग्राम पर बंद हुई थी।

सोने के साथ चांदी के दाम में भी तेजी देखने को मिली है। आज चांदी भी 200 रुपये उछलकर 77,450 रुपये प्रति किलोग्राम पर पहुंच गई। पिछले बंद में सिल्वर 77,250 रुपये प्रति किलोग्राम पर बंद हुआ था। एचडीएफसी सिक्योरिटीज में कमोडिटी के वरिष्ठ विश्लेषक सौमिल गांधी ने कहा। महत्वपूर्ण अमेरिकी मैक्रो डेटा के नतीजों से पहले गुरुवार को सोने की कीमतें बढ़ीं। सकारात्मक वैश्विक संकेतों के कारण दिल्ली के बाजारों में सोने की हाजिर कीमतें (24 कैरेट) 350 रुपये बढ़कर 67,350 रुपये प्रति 10 ग्राम पर कारोबार कर रही हैं।

वैश्विक बाजारों में कॉमेक्स पर सोना हाजिर 2,194 अमेरिकी डॉलर प्रति औंस पर कारोबार कर रहा था, जो पिछले बंद से 14 अमेरिकी डॉलर अधिक है।

एलकेपी सिक्योरिटीज के वीपी रिसर्च एनालिस्ट जतीन त्रिवेदी ने कहा।

ब्याज दरों को लेकर सकारात्मक धारणा के बीच सोने की कीमतें ऊंची कारोबार कर रही थीं, लेकिन डॉलर सूचकांक में बढ़ोतरी से पीली धातु की कीमतों पर दबाव पड़ सकता है। 2,200-2,215 अमेरिकी डॉलर के आसपास मजबूत प्रतिरोध देखा गया है।

चांदी भी मामूली बढ़त के साथ 24.55 अमेरिकी डॉलर प्रति औंस पर थी। पिछले कारोबार में यह 24.50 अमेरिकी डॉलर प्रति औंस पर बंद हुआ था।

जेएम फाइनेंशियल सर्विसेज लिमिटेड में ईबीजी - कमोडिटी एंड करेंसी रिसर्च के उपाध्यक्ष प्रणव मेर ने कहा

सोने को स्थिर से सकारात्मक कारोबार करते देखा जा रहा है, लेकिन प्रमुख मुद्राओं के मुकाबले मजबूत डॉलर से बढ़त सीमित है, जबकि गुरुवार और शुक्रवार को आने वाले अमेरिकी सकल घरेलू उत्पाद और व्यक्तिगत उपभोग व्यय (पीसीई) मुद्रास्फीति डेटा से पहले कुछ सावधानी देखी जा रही है।

अब देश में नहीं मिलेगा गुलामी को स्थान... सही मायने में गुलामी की बेड़ियों से छूट रहा देश

नई दिल्ली। भारत भले ही अंग्रेजों की कैद से 1947 में आजाद हो गया था लेकिन अंग्रेजियत और गुलामी की निशानियों से अभी भी पूरी तरह आजाद नहीं हो पाया है। 2014 के बाद से भारत की जनता ने एक बड़ा बदलाव किया और उसके बाद से ही गुलामी की बेड़ियों टूटनी शुरू हो गई। मुगलिया और अंग्रेजी कई गुलामी की निशानियों देश में बनी रही जो एक एक कर अब खत्म हो रही हैं। लेकिन इन्हें पूरी तरह खत्म कर देश को मजबूती के साथ खड़ा करना है तो 2014 के बदलाव को बरकरार रखना होगा। आजादी के बाद से ही देश वासियों से उनका असली इतिहास छुपाया गया, अंग्रेजी और अंग्रेजी गुलामी की निशानियों को मजबूती देकर देश को मानसिक रूप से गुलाम बनाए रखा गया। लेकिन अब समय है जब देश करवट बदल रहा है और आजादी के परवानों के पूर्ण स्वराज्य के स्वप्न को साकार करने की तरफ आगे बढ़ रहा है। आजादी की उस लड़ाई में सुभाष चंद्र बोस ने खून मांगा था **तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा** लेकिन अब पूर्ण आजादी के लिए बस आप सभी को वोट करना है। **तो वोट जरूर करें और देश तथा धर्म को केंद्र में रखकर करें।**

आदर्श आचार संहिता के उल्लंघन करने वालों की शिकायत 'सीविजिल' एप्प में करें दर्ज, 100 मिनट के अंदर प्रदान होगी कार्रवाई की सूचना

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। भारत निर्वाचन आयोग के द्वारा निर्वाचन अवधि के दौरान आदर्श आचार संहिता के उल्लंघनों के सम्बंध में सूचना देने के लिए नागरिकों के लिए 'सीविजिल' एप्प बनाया गया हैं। भारत निर्वाचन आयोग द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार सीविजिल ऑरेटिंग मॉडल निम्नानुसार कार्य करेगाः नागरिक एक चित्र खिचेगा या 2 मिनट का वीडियो रिकार्ड करेगा। संबंधी मानचित्रण सहित फोटो। वीडियो एप पर अपलोड किया जाता हैं। इसके सफलतापूर्वक प्रस्तुतिकरण के पश्चात नागरिक को अपने मोबाइल पर कार्रवाई के अपडेट का पता लगाने तथा अनुवर्ती अपडेट प्राप्त करने के लिए एक विशिष्ट आईडी मिलती हैं। इस प्रकार एक व्यक्ति अनेक घटनाओं की रिपोर्ट कर सकता हैं तथा अनुवर्ती कार्रवाई को अपडेट हेतु प्रत्येक रिपोर्ट के लिए उसे एक विशिष्ट आईडी मिलेगा। वहीं, नागरिक द्वारा शिकायत की सूचना देने पर यह सूचना जिला नियंत्रण कक्ष में बीप करती हैं, जहां इसे फिल्ड इकाई को सौंपा जाता हैं। एक फिल्ड इकाई में उड़न दस्ते, स्थैतिक निगरानी दल, आरक्षित दल आदि होते हैं। प्रत्येक फिल्ड इकाई के पास एक जीआईएस आधारित मोबाइल एप्लिकेशन होगी जिसे ₹सीविजिल डिस्पैचर₹ कहा जाता हैं, जिससे फिल्ड इकाई सीधे जीआईएस और नेविगेश्प तकनीक के माध्यम से उस स्थान पर पहुंच जाती है तथा कार्रवाई करती हैं। फिलड इकाई द्वारा कार्रवाई करने के पश्चात, यह निर्णय और निपटान के लिए रिटर्निंग अधिकारी को सीविजिल डिस्पैचर के माध्यम से की गई कार्रवाई संबंधी रिपोर्ट के रूप में संबंधित दस्तावेज का संदेश देता हैं तथा अपलोड करता हैं। यदि घटना सही पाई जाती हैं तो सूचना को आगे की कार्रवाई के लिए भारत निर्वाचन आयोग के राष्ट्रीय शिकायत पोर्टल पर भेज दिया जाता है तथा सतर्क नागरिक को की गई कार्रवाई की सूचना 100 मिनट के अंदर प्रदान कर दी जाती हैं, एप में इसके दुरुपयोग को रोकने के लिए अंतर्निहित सूचना को आगे की कार्रवाई के लिए भारत निर्वाचन आयोग के राष्ट्रीय शिकायत पोर्टल पर भेज दिया जाता है तथा सतर्क नागरिक को की गई कार्रवाई की सूचना 100 मिनट के अंदर प्रदान कर दी जाती हैं, एप में इसके दुरुपयोग को रोकने के लिए अंतर्निहित विशेषताएं हैं। यह केवल आदर्श आचार संहिता के उल्लंघनों के बारे में शिकायत प्राप्त करेगा। वहीं, फोटो या वीडियों खींचने के बाद घटना की रिपोर्ट करने के लिए प्रयोक्ता को 5 मिनट मिलेंगे। गलत दृश्यों को अपलोड करने से रोकने के लिए, एप पूर्व- रिकार्ड किए गए फोटों/वीडियों को अपलोड नहीं करने देगा तथा न ही यह प्रयोक्त को इस ऐप द्वारा खींची गई फोटो को फोन गैलरी में सेव करने देगा। इसके अतिरिक्त, यह एप्लिकेशन केवल उन राज्यों में सक्रिय होगी जहां निर्वाचन की घोषणा की गई हैं। जिस क्षण कोई नागरिक राज्य से बाहर निकलेगा, यह ऐप निष्क्रिय हो जाएगी। दरअसल, निर्वाचन आयोग इस ऐप तथा अपने आस-पास आदर्श आचार संहिता के उल्लंघनों के संबंध में नागरिकों द्वारा तुरंत रिपोर्ट करने के प्रति उनके उत्साह पर भरोसा कर रहा हैं, ताकि ऐसी घटनाओं को रोका जा सके और आयोग के स्वतंत्र एवं निष्पक्ष निर्वाचन करवाने

जानकारी के अनुसार सीविजिल ऑरेटिंग मॉडल निम्नानुसार कार्य करेगाः नागरिक एक चित्र खिचेगा या 2 मिनट का वीडियो रिकार्ड करेगा। संबंधी मानचित्रण सहित फोटो। वीडियो एप पर अपलोड किया जाता हैं।

तीन बड़ी नियुक्तियों को मिली मंजूरी

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। तीन बड़ी नियुक्तियों को लेकर केंद्रीय गृह मंत्रालय ने केंद्र सरकार की नियुक्ति समिति को प्रस्ताव भेजा था। नियुक्ति समिति ने इस प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है। जिसमें सदानंद वसंत को केंद्रीय गृह मंत्रालय ने एनआईए का महानिदेशक, पीयूष आनंद को एनडीआरएफ का महानिदेशक बनाया गया है। इसके अलावा आईपीएस राजीव कुमार शर्मा को पुलिस अनुसंधान और विकास ब्यूरो का महानिदेशक बनाया गया है। केंद्रीय गृह मंत्रालय ने अपने ताजा आदेश में बताया कि आईपीएस सदानंद वसंत को 31 दिसंबर 2026 तक राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) के महानिदेशक के रूप में नियुक्त किया है। सदानंद वसंत मौजूदा एनआईए डायरेक्टर जनरल दिनकर गुप्ता की जगह लेंगे। दिनकर गुप्ता 31 मार्च 2024 को रिटायर्ड हो रहे हैं। आईपीएस राजीव कुमार शर्मा को पुलिस अनुसंधान और विकास ब्यूरो का महानिदेशक बनाया गया है। शर्मा बालाजी श्रीवास्तव के स्थान पर नियुक्त हुए हैं। शर्मा 30 जून 2026 तक इस पद पर मौजूद रहेंगे। बालाजी श्रीवास्तव भी 31 मार्च 2024 को रिटायर हो रहे हैं। वहीं तीसरी नियुक्ति राष्ट्रीय आपदा मोचन बल (एनडीआरएफ) में की गई है। इसमें आईपीएस पीयूष आनंद को डायरेक्टर जनरल बनाया गया है। पीयूष आनंद वर्तमान महानिदेशक अतुल करवाल की जगह लेंगे। एनआईए के नए महानिदेशक बने सदानंद बसंत कड़े फैसले लेने के लिए जाने जाते हैं। इससे पहले उन्हें 2015 में सीआरपीएफ का डीजी बनाया गया था। एनडीआरएफ की कमान संभालने वाले पीयूष आनंद यूपी पुलिस में वर्ष 1991 बैच के आईपीएस अफसर रह चुके हैं। पीयूष मूल रूप से दिल्ली के रहने वाले हैं। राजीव कुमार शर्मा की बात करें तो 1990 बैच के आईपीएस अधिकारी हैं। इससे पहले उन्हें भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो (एसीबी) का महानिदेशक बनाया गया था।

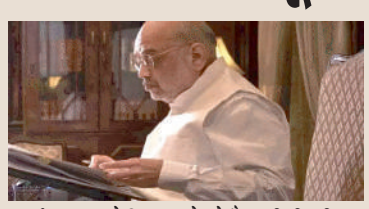

बिजेड़ी उम्मीदवार सूची: पुराने अधिक, नये कम

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड उडीशा

भुबनेश्वर : बिजेड़ी उम्मीदवारों की सूची प्रकाशित हो चुकी है। दो चरण की उम्मीदवार सूची में, छह बीजेडी विधायकों को बाहर कर दिया गया है और अन्य को टिकट मिला है। कम ही जगहों पर नए चेहरे देखने को मिले हैं। 15 लोकसभा सीटों में से 4 पर उम्मीदवार अपरिवर्तित हैं। हालांकि, विवादित सीट के लिए उम्मीदवार के नाम की घोषणा नहीं की गई है ।विधानसभा सीट के लिए उम्मीदवारों के चयन ने सभी को कुछ हद तक चौंका दिया है । जैसी उम्मीद थी वैसी नहीं थी कि बिजेड़ी की कई उम्मीदवारों के टिकट काटेगी । वरिष्ठ विधायकों ने अपने-अपने टिकट बरकरार रखे हैं। मंत्री अतनु सब्यसाची नाइक, विक्रम केशरी अरुख, जगन्नाथ साराका, निरंजन पुजारी, रिता साहू को अपनी-अपनी सीटों पर टिकट मिल गया है, जबकि 4 मंत्रियों की सीटों पर टिकटों की घोषणा नहीं की गई है। ये हैं अशोक पांडा, सारदा नायक, बसंती हेम्ब्रम और तुसारकांति बेहरा।

हल्दी रीति या फिजूल खर्ची?

अमीरों के चक्कर में बेचारा गरीब पिस रहा है, आज कल ग्रामीण परिवेश में होने वाली शादियों में एक नई रस्म का जन्म हुआ है हल्दी रस्म। हल्दी रस्म के दौरान हजारों रूपये खर्च कर के विशेष डेकोरेशन किया जाता है, उस दिन दूल्हा या दुल्हन विशेष पीत (पीले) वस्त्र धारण करते हैं। साल 2020 से पूर्व इस हल्दी रस्म का प्रचलन ग्रामीण क्षेत्रों में कहीं पर भी देखने को नहीं मिलता था, लेकिन पिछले साल दो-तीन साल से इसका प्रचलन बहुत तेजी से ग्रामीण क्षेत्र में बढ़ा है। पहले हल्दी की रस्म के पीछे कोई दिखावा नहीं होता था, बल्कि तार्किकता होती थी। पहले ग्रामीण क्षेत्रों में आज की तरह साबुन व शैम्पू नहीं थे और ना ही ब्यूटी पार्लर था। इसलिए हल्दी के उबटन से घिसघिस कर दूल्हे-दुल्हन के चेहरे व शरीर से मृत चमड़ी और मेल को हटाने, चेहरे को मुलायम और चमकदार बनाने के लिए हल्दी, चंदन, आटा, दूध से तैयार उबटन का प्रयोग करते थे। ताकि दूल्हा-दुल्हन सुंदर लगे। इस काम की जिम्मेदारी घर-परिवार की महिलाओं की थी। लेकिन आजकल की हल्दी रस्म मोडिफाइड, दिखावटी और मंहगी हो गई है। जिसमें हजारों रूपये खर्च कर डेकोरेशन किया जाता है। महंगे पीले वस्त्र पहने जाते है। दूल्हा दुल्हन के घर जाता है और पूरे वातावरण, कार्यक्रम को पीताम्बरी बनाने के भरसक प्रयास किये जाते हैं। यह पीला ड्रामा घर के मुखिया के माथे पर तनाव की लकीरें खींचता है जिससे चिंतामय पसीना टपकता है। पुराने समय में जहां कच्ची छतों के नीचे पक्के इरादों के साथ दूल्हा-दुल्हन बिना किसी दिखावे के फेरे लेकर अपना जीवन आनंद के साथ शुरू करते थे, लेकिन आज पक्के इरादे कम और दिखावा और बनावटीपन ज्यादा होने लगा है। आजकल देखने में आ रहा है कि ग्रामीण क्षेत्र में आर्थिक रूप से असक्षम परिवार के लड़के भी इस शहरी बनावटीपन में शामिल होकर परिवार पर अतिरिक्त आर्थिक बोझ बढ़ा रहे है। क्योंकि उन्हें अपने छुट भईए नेताओं, वन साइड हेयर कटिंग वाले या लम्बे बालों वाले सिगरेट का धुंआ उड़ाते दोस्तों को अपना ठरका दिखाना होता है। इंस्टाग्राम, फेसबुक आदि के लिए रील बनानी है। बेटे के रील बनाने के चक्कर में बाप की कर्ज़ उतरने में ही रेल बन जाती है। ग्रामीण क्षेत्रों में ऐसे घरों में फिजूल खर्ची में पैसा पानी की तरह बहाया जाता है जिनके मां-बाप ने हाड़-तोड़ मेहनत और पसीने की कमाई से पाई-पाई जोड़ कर मकान का ढांचा खड़ा किया लेकिन ये नवयौवन लड़के-लड़कियां बिना समझे अपने मां-बाप की हैसियत से विपरीत जाकर अनावश्यक खर्चा करते हैं। जिन परिवारों की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं हो उन परिवारों के बच्चों को मां-बाप से जिद्द करके इस तरह की फिजूल खर्ची नहीं करवानी चाहिए। आजकल काफी जगह यह भी देखने को मिलता है कि बच्चे (जिनकी शादी है) मां-बाप से कहते है आप कुछ नहीं जानते, आपको समझ नहीं है, आपकी सोच वही पुरानी अनपढ़ों वाली रहेगी, यह कहते हुए अपने माता-पिता को गंवारू, पिछड़ा, थे तो बौइअ बरगा हो कहते हैं। इस तरह की फिजूलखर्ची वाली रस्म को रोकने के समाचार पढ़ कर खुशी होती है लेकिन अपने घर, परिवार, समाज, गांव में ऐसे कार्यक्रम में शरीक होकर लुत्फ उठा रहे हैं, फोटो खिंचवाकर स्टेटस लगा रहे हैं।

आज भी अपने महान कार्यों से हमारे अज्ञानान्धकार को दूर कर रहे हैं भगवान महावीर स्वामी जी : पंकज जैन

परिवहन विशेष न्यूज

- *जन्म, जरा, आधि और व्याधि के बंधनों से मुक्त होकर अजर-अमर और अविनाशी हो गए भगवान महावीर स्वामी जी : पंकज जैन*
- *भगवान महावीर स्वामीजी की जन्मजयंती की सभी को शुभकामनाएं : पंकज जैन*

आगरा। भगवान महावीर जयंती जैन समुदाय के सबसे महत्वपूर्ण त्योहारों में से एक है, और इसे भारत सहित दुनिया भर में धूमधाम से मनाया जाता है। भगवान महावीर स्वामी जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर हैं। इस साल महावीर जयंती 21अप्रैल, रविवार को मनाई जाएगी। इस अवसर पर सुप्रशिद्ध एवं लोकप्रिय पंकज जैन ने भगवान महावीर स्वामी जी की जन्मजयंती की सभी को अग्रिम शुभकामनाये व्यक्त करते हुए कहा कि दुष्टों की दुष्टा से लोगों को बचाने और जन - जन के कल्याण के लिए हमारी भारत भूमि पर अनेक महापुरुषों ने अवतार लिए हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम, महाबली हनुमान जी, भगवान श्रीकृष्ण इसी धरती पर पैदा हुए हैं। ऐसे ही महान पुरुषों में भगवान महावीर स्वामी जी का नाम सर्वोपरि है। भगवान महावीर स्वामीजी की जन्मजयंती शांति और सद्भाव के लिए मनायी जाती हैं।आज जब इस संसार में घृणा, बैर, द्वेष, मार-काट का बोलबाला है, ऐसे में भगवान महावीर स्वामी जी के उपदेशों पर चलकर जीवन को सार्थक बनाया जा सकता है। इस साल भगवान महावीर स्वामी जी की जन्मजयंती 21 अप्रेल को हैं। कहा जाता हैं कि धर्म की संस्थापना करने वाले तथा सज्जन व्यक्तियों की रक्षा के लिए दुष्टों से बचने का मार्ग दिखाने वाले भगवस्वरूप भगवान महावीर स्वामी जी का जन्म उस समय हुआ जब दुष्टों का महत्त्व बढ़ने के कारण केवल दुष्टों की ही प्रतिष्ठा समाज में लगातार बढ़ती जा रही थी। इससे उस समय का जन समाज मन-ही-मन पीड़ित और तंग था क्योंकि इससे दुष्टवादी चेतना सभी जातियों को हीन और मलीन समझ रही थी। कुछ समय बाद तो समाज में यह भी असर पड़ने लगा कि धर्म आडम्बर बनकर सभी जातियों को दबा रहा है। दुष्टजाति गर्वित होकर अन्य जातियों को पीड़ित करने लगी। इसी समय देवीजी की कृपा से भगवान महावीर स्वामी जी ने धर्म के सच्चे स्वरूप को समझाने के लिए परस्पर भेदभाव की गहराई को भरने के लिए सत्यस्वरूप में इस पावन भारत भूमि पर प्रकट हुए। भगवान महावीर जी का जन्म चैत्र माह के शुक्ल पक्ष के 13वें दिन पटना से कुछ किलोमीटर दूर बिहार के कुंडलपुर में हुआ था। उस समय वैशाली राज्य की राजधानी मानी जाती थी। उनका जन्म 599 ईसा पूर्व में हुआ था। उनके माता-पिता - राजा सिद्धार्थ और रानी त्रिशला ने उनका नाम वर्धमान रखा था। जब महावीर जी 30 वर्ष के हुए, तो उन्होंने सत्य की खोज में अपना सिंहासन और परिवार छोड़ दिया। वह एक तपस्वी के रूप में 12 वर्षों तक निर्वासन में रहे। इस दौरान उन्होंने अहिंसा का प्रचार करते हुए सभी के प्रति श्रद्धा का व्यवहार किया। इंद्रियों को नियंत्रित करने में असाधारण कौशल दिखाने के बाद उन्हें ₹महावीर₹ नाम मिला। यह व्यापक रूप से माना जाता है कि जब महावीर 72 वर्ष के थे, तब उन्हें ज्ञान (निर्वाण) प्राप्त हुआ।

श्री जैन ने आगे कहा कि भगवान महावीर स्वामी जी जब वे 30 वर्ष के हो गए, तो उन्होंने अपनी सारी व्यक्तिगत संपत्ति ज़रूरतमंद और गरीबों को दान कर दी, शेष संपत्ति को वे अपने घर पर ही छोड़ गए।यद्यपि आपको पारिवारिक सुखों की कोई कमी न थी लेकिन ये पारिवारिक सुख तो आपको आनन्दमय और सुखमय फूल न होकर दुःख एवं काँटों के समान चुभने लगे थे। आप सदैव संसार की असारता पर विचारमग्न रहने लगे। आप बहुत ही दयालु और कोमल स्वभाव के थे। अतः प्राणियों के दुःख को देखकर संसार से विरक्त से रहने लगे। इस दौरान उन्होंने बहुत कम खाया और अधिकांशतः उन्होंने बिना कुछ खाए-पिए ही जीवन गुज़ारा। लोगों ने उन्हें तंग भी किया, परंतु वे शांत रहे। उन्होंने किसी से कुछ नहीं कहा। बहुत वर्षों के ध्यान के बाद इन्हें शक्ति, ज्ञान और आशीर्वाद की अनुभूति हुई। ज्ञान प्राप्ति के बाद, इन्होंने लोगों के वास्तविक जीवन के दर्शन, उसके गुण और जीवन के आनंद से शिक्षित करने के लिए यात्रा की, आपने इस पथ के लिए गुरुवर पार्श्वनाथ का अनुयायी बनकर लगभग बारह वर्षों तक अनवरत कठोर साधना की थी। 42 वर्ष की उम्र में उन्होंने सत्य की खोज कर ही ली। अर्थात उन्हें कैवल्य की प्राप्ति हुई और वे अर्हत या जिन कहलाए। फिर वर्धमान महावीर जी दिगंबर भिक्षु बन गए। उन्होंने बिना किसी मोटरगाड़ी के पूर्वी भारत के विभिन्न प्रांतों की यात्रा की, जो बिहार, झारखंड, पश्चिमी बंगाल, उड़ीसा और पूर्वी उत्तर प्रदेश में हैं। उन्होंने इन सब स्थानों पर उपदेश दिए। उनके तीन सिद्धान्त, जैन धर्म के तीन रत्न हैं- सम्यक ज्ञान, सम्यक धर्म और सम्यक आचरण। उनके महाव्रत थे-सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह। उनका ध्येय था कि हर मनुष्य मोक्ष प्राप्त करे। इस विकट तपस्या के फलस्वरूप आपको सच्चा ज्ञान प्राप्त हुआ। 72 वर्ष की उम्र में जन्म, जरा, आधि और व्याधि के बंधनों से मुक्त होकर महावीर जी अजर-अमर तथा अविनाशी हो गए और जैन धर्म के महान तीर्थांकारों में से एक बन गए, जिसके कारण आज इन्हें जैन धर्म का संस्थापक माना जाता है। उन्होंने वर्षों तक बिहार के उत्तर तथा दक्षिण में अपने मत का प्रचार-प्रसार किया। अनगिनत अनुयायी बन जाने पर इन्होंने लोगों को सदाचार व खान-पान में पवित्रता तथा प्राणीमात्र पर दया करने की शिक्षा दी। आज भी आप अपने धर्म प्रवर्तन पथ पर महान कार्यों से हमारे अज्ञानान्धकार को दूर कर रहे हैं। जीओ और जीने दो का नारा लगाकर समाज को जीव हत्या बंद करने तथा मांसाहार त्यागने की अपील की। भगवान महावीर स्वामी जी ने अपने धर्म को मानने वालों का नाम 'जैनी' रखा। भगवान महावीर स्वामी जी की मृत्यु के पश्चात जैन अनुयायी दो भागों में बँट गए-दिगम्बर व श्वेताम्बर। निर्वसन रहने वाले दिगम्बर कहलाए तथा वस्त्र धारण करने वाले श्वेताम्बर कहलाए। जैन धर्म के प्रमुख रूप से पाँच सिद्धान्त हैं, जिनका सार इस प्रकार है–'सत्य, अहिंसा, चोरी न करना, आवश्यकता से अधिक कुछ भी एकत्रित न करना तथा शुद्धाचरण। इन सिद्धान्तों पर चलकर मनुष्य मोक्ष पा सकता है। इस दिन जैन जरूरतमंदों को भोजन और कपड़े दान देते हैं। जैन धर्म पशुवध का कड़ा विरोध करता है और इसलिए पशुहत्या रोकने के लिए दान दिया जाता है। धर्मार्थ कार्यों के अलावा, भगवान महावीर को समर्पित मंदिरों में प्रार्थनाएँ और उपवास के साथ मनाते हैं। यह उत्सव भगवान महावीर के जन्म और उनके जीवन के उपलक्ष्य में मनाया जाता है, इस अवकाश की सांस्कृतिक महत्ता काफी ज्यादा है, इस उत्सव के दौरान, लोग भगवान महावीर की शिक्षाओं को याद करते हैं। यह विनम्रता और खुशी का दिन है। कई लोग अपने कर्मों और भगवान महावीर की शिक्षाओं पर विचार करने के लिए महावीर जयंती मनाते हैं।

अहिंसा परमो धर्म...! प्रभु राम, कृष्ण ने जो किया वो थी सच्ची अहिंसा जो आज हिंदुओं को समझनी चाहिए

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। अहिंसा परम धर्म है तो भगवान श्री राम श्री कृष्ण ने धर्म स्थापना के लिए आजकल वाली कथित अहिंसा का सहारा क्यों नहीं लिया ? (वैसे सही मायने में तो वही अहिंसा थी...क्योंकि यहां किसी निरपराध के साथ कुछ गलत नहीं किया गया) क्योंकि ये श्लोक पूरा नहीं पढ़ाया या बताया गया है। वामपंथियों और सत्ता लोलुपता से ग्रसित नेताओं ने ' अहिंसा परमो धर्माः' ही हिन्दू जनता को बताया जिससे कि हिन्दू अत्याचार सहते हुए भी प्रतिकार ना कर सके। कभी कभी मै सोचता था कि " हिन्दु "सनातन धर्म इतना महान और शक्तीशाली था कि पूरे विश्व में उसका डंका बजता था फिर क्या हुआ कि सनातन धर्म " हिन्दु "का इतना पतन (नुकसान या हानि) हो गया क्या कारण था ? ? ? जब सोचा और पढा तो समझ में आया कि सम्राट अशोक ने अपने शासन काल में अपनी वीरता से सम्पूर्ण भारत पर अपना एक छत्र राज किया परन्तु जब बौद्ध धर्म अपनाया तो " अंहिसा परमो धर्मः " श्लोक का प्रचार किया और इस अधूरे श्लोक ने सनातन धर्म " हिन्दु " का " सत्यानाश " कर डाला जबकि महाभारत का पूरा श्लोक है "" अहिंसा परमो धर्मः धर्म हिंसा तथैव चः ।"" अर्थातः- यदि मनुष्य के लिऐ अहिंसा परम धर्म है तो " धर्म " मतलब (सत्य) की रक्षा के लिए हिंसा उससे भी श्रेष्ठ है जब धर्म (सत्य) पर संकट आए तो मनुष्य को शस्त्र उठाना चाहिए और धर्म (सत्य) की रक्षा करनी चाहिए। (सही मायने में वो हिंसा नहीं होती जहां आप धर्म को रक्षा के लिए कुछ करते हैं) अधूरे श्लोक का परिणाम ये निकला कि " हिन्दुओं "ने अपने शस्त्र छोड दिए " शस्त्र विद्या " का अभ्यास छोड दिया ऋषि मुनियों ने " शस्त्रों " पर अनुसंधान करने छोड दिए और ये मान बैठे कि सनातन धर्म (हिन्दु) धर्म तो विश्व में सबसे महान और शक्तीशाली है इस को कोई नहीं हरा सकता और चल पडे शांती के मार्ग पर सैकडों वर्ष बीत गए जो " शस्त्र विद्या " एक पीढी से दुसरी पीढी को प्राप्त होती थी वो नहीं प्राप्त नहीं हुई आने वाली पीढीयों को के पास जो आणविक और दिव्य अस्त्रों का जो ज्ञान था वो नहीं मिला परिणाम ये हुआ कि जो हिन्दु योद्धा थे वो सिर्फ तीर ,तलवार और भालों से लडने वाले योद्धा बनकर रह गए दिव्य अस्त्रों का ज्ञान उन्हें नहीं मिल पाया और " अंहिसा परमो धर्मः " के कारण बहुत कम ही योद्धा रह गए।और अधिकतर हिन्दु शांती और अहिंसा के मार्ग पर चलते थे क्योंकि भारत वर्ष की संस्कृति में विज्ञान उन्नत किस्म का था तो हिन्दु ऐसी वस्तुओं का निर्माण करते थे जो पूरे विश्व में कहीं नहीं होती थी तो उनसे हिन्दु विदेशियों से व्यापार करता था और विदेशी उन्नत किस्म की वस्तुऐं खरीदने भारत आते थे और भारतीय व्यापारी व्यापार से बहुत धन अर्जित करते थे जिसके कारण भारत सोने की चिडिया कहलाता था यही कारण था कि मुगल लुटेरों की नजर भारत पर जम गई और वो भारत को लूटने के लिऐ भारत पर हमले करने लगे क्योंकि भारत अहिंसा के मार्ग पर चलता था और योद्धा कम बचे थे इसकी तुलना में मुगल लुटेरे क्रूर और हिंसक पृवर्ती के थे उन्होंने हिन्दुओं की नृशंस हत्या करनी शूरू कर दी और भारत के हिस्सों पर कब्जा करना शुरू कर दिया भारत में योद्धा कम थे और मुगल दुर्दांत और हत्यारे थे उन्होंने भारत पर कब्जा कर लिया उसके बाद अंग्रेजों ने भी यही काम किया और भारत को लूट कर ले गऐ और इसी अधूरे श्लोक " अंहिसा परमों धर्मः " का उपयोग गॉधी ने किया और भारत के क्रांतीकारी वीरों को दोषी बताया फिर 1947 की आजादी के बाद भारत के प्रधान मंत्री " जवाहर लाल " नेहरू ने भी इसी अधुरे श्लोक की गलतफहमी में हथियारों के कारखाने में हथियारों का उत्पादन बंद करवा दिया जिसका परिणाम ये हुआ चीन ने पीठ में छुरा घोंप दिया और 1962 में भारत पर हमला कर दिया और हिमालय पर्वत के बहुत सारे हिस्से पर अपना कब्जा कर लिया और " कैलाश पर्वत " जो कि हिन्दुओं का पवित्र तीर्थ स्थल भी चीन के कब्जे में चला गया और हमारे जवानों के पास इतना हथियार और गोला बारूद भी नहीं था की चीन से लड सके और तो मित्रों कहने का तात्पर्य इतना ही है कि इस अधुरे श्लोक " अंहिसा परमो धर्मः " का उपयोग छोडो और जागो और धर्मकी रक्षा के लिऐ शस्त्र उठाओ।

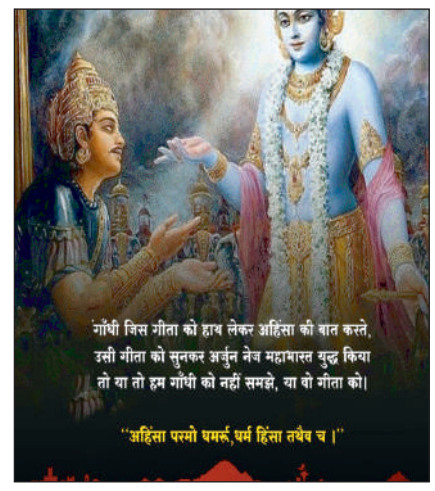

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095 . newstransportvishesh@gmail .com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी .आर .बी . एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। **Title Code : DELHIN28985. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023**